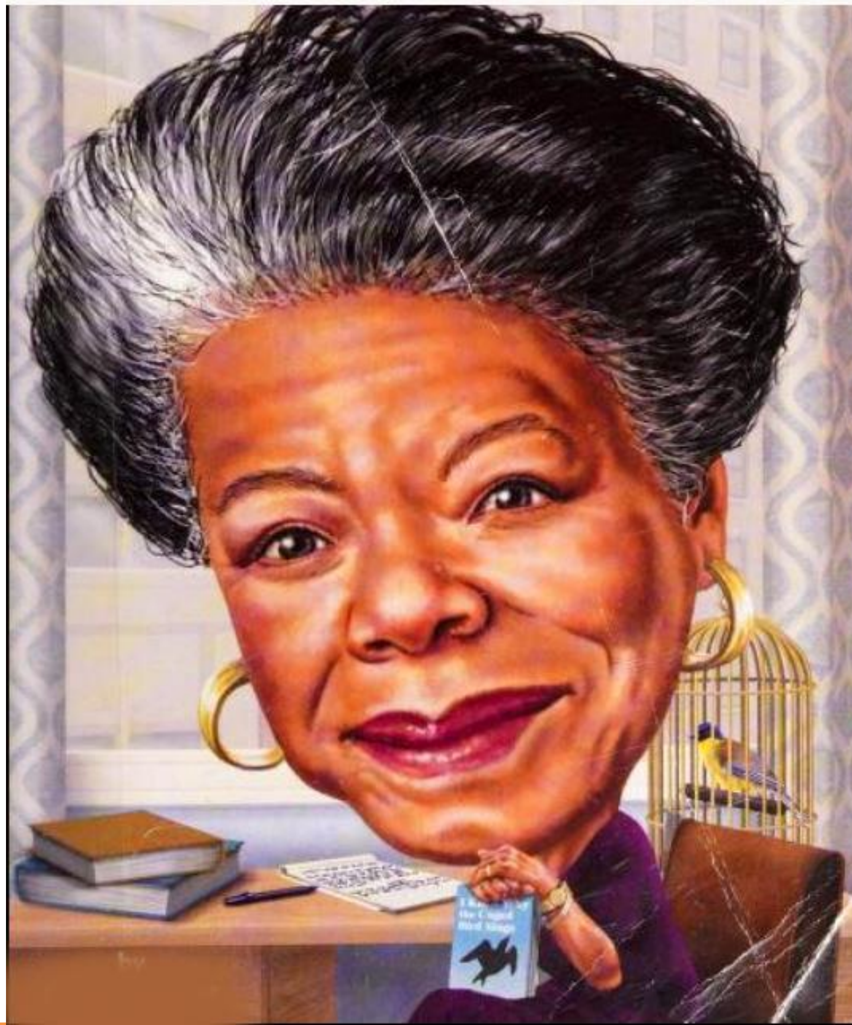
कौन थी माया एन्जलो?



कौन थी माया एन्जलो?



लेखन: एलन लाब्रेक

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

अनुक्रम

कौन थी माया एन्जलो ?

20 जनवरी 1993, वॉशिंगटन में एक धूपदार, चुस्त सर्दियों का दिन था। छह फुट लम्बी, चौंसठ वर्षीय अफ्रीकी-अमरीकी स्त्री माया एंजलो, कैपिटल भवन (अमरीका का संसद भवन) की सीढ़ियों पर खड़ी थी। उन्होंने काला कोट, चटक लाल लिपस्टिक और सोने की बड़ी बालियाँ पहन रखी थीं। यह वह दिन था जिस दिन अमरीका के बयालिसवें राष्ट्रपति विलियम जैफरसन क्लिंटन अपने पद की शपथ लेने वाले थे।

मया ढ़ाई लाख लोगों के सामने अपनी कविता *ऑन द पल्स ऑफ मॉर्निंग* पढ़ने वाली थीं। पर इससे भी अधिक लोग घर बैठे इस समारोह को अपने टेलिविज़न पर देख रहे थे। किसी राष्ट्रपति के शपथ ग्रहण समारोह में कविता पाठ हुए बत्तीस वर्ष बीत चुके थे। साथ ही माया यह अवसर पाने वाली पहली अफ्रीकी-अमरीकी महिला थीं। अनेक बार पुरस्कृत कवियत्री होने के बावजूद वे कुछ घबराई हुई थीं।

उन्होंने बाद में कहा कि "मैंने काशिश की कि मैं यह भुला दूँ कि मैं कहाँ हूँ।"

अपार जन समूह शान्त था, मंत्रमुग्ध सा। माया ने अपनी गहरी, दमदार आवाज़ में कविता पढ़ी। हरेक पंक्ति को पढ़ते समय उनकी आवाज़ सागर की लहरों की मानिंद उठती-गिरती रही। उनके शब्द विश्व भर के लोगों के बीच अमन-चैन और दोस्ती का आगाज़ कर रहे थे।

पूरी कविता को पढ़ने में उन्हें बस छह मिनट लगे। कविता की अंतिम पंक्तियाँ थीं:

एण्ड से सिम्पली

वैरी सिम्पली

विद होप

गुड मार्निंग।

(और सहजता से कहो / बड़ी ही सहजता से / उम्मीद के साथ / सुप्रभात।)





जब माया ने कविता खत्म की, मौजूद जन समुदाय उठ खड़ा हुआ, तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी। राष्ट्रपति क्लिन्टन ने शुक्रिया अदा करने उन्हें गले से लगा लिया।

माया एंजलो दुनिया भर में प्रसिद्ध कवि और लेखिका थीं, शिक्षिका और नागरिक अधिकारों की पैरोकार थीं। गायिका और नर्तक भी। जब वे बोलतीं उनकी आवाज़ मोहक, दमदार होती और उनका अंदाज़ खास होता था।

अपने विचारों और शब्दों के माध्यम से माया ने लोगों को प्रेम के साथ जीना, एक-दूसरे का सम्मान करना और सदय होना सिखाया। वे कहती थीं कि उदास और दुखी लोगों के जीवन में आनन्द का संचार करना ज़रूरी है। वे सलाह देतीं, "किसी पर आ घिरे बादल में इन्द्रधनुष बनने की कोशिश करो।"

अपने कठिन-कठोर बचपन के बावजूद माया ने अपनी आवाज़ का भरपूर इस्तेमाल किया। वे विश्व भर के लिए इन्द्रधनुष बनीं।

अध्याय 1

मौमा

माया एंजलो का जन्म नाम था - मार्गरीट एनी जॉनसन। वे 4 अप्रेल, 1928 को सेंट लूइस्, मिसूरी में पैदा हुई थीं। उनकी माँ विवियन बैक्स्टर, एक नर्स थीं, पर साथ ही एक कैसिनो में पत्ते बाँटने का काम भी करती थीं। माया के पिता बेली जॉनसन एक रिहाइशी भवन में दरबान का काम करते थे। माया के जन्म के समय विवियन और बेली का एक वर्षीय बेटा, बेली जूनियर भी था।



बेली जूनियर मार्गरीट नहीं कह पाता था, सो वह अपनी बहन को 'माय-अ-सिस्टर' पुकारता था। पर जल्द ही इसे और छोटा कर उसने बहन को माया कहना शुरू कर दिया। तब से यही मार्गरीट का 'डाक नाम' पड़ गया।

माया के माता-पिता की आपस में खास बनती नहीं थी, उनकी शादीशुदा ज़िन्दगी आसान नहीं थी। जब माया तीन साल की हुई, उनका तलाक हो गया। माँ और पिता दोनों को लगा कि वे अकेले दो बच्चों को नहीं संभाल सकते। सो, बेली जूनियर और माया को स्टैम्पस्, आर्केन्सॉ जाने वाली रेलगाड़ी में बिठा, उनकी दादी के पास रहने पठा दिया गया।





बेली और माया स्टैम्पस् पहुँचने के बाद अपनी दादी मौमा हैन्डरसन और चचा विलि के साथ रहने लगे। स्टैम्पस् में रंगभेद लागू था। काले और गोरे अलग-अलग मुहल्लों में रहते थे। मौमा एक काले मुहल्ले में एक दुकान चलाती थीं। अगले चार वर्षों तक वे दुकान के पिछवाड़े में बने कुछ छोटे कमरों में दादी और चाचा के साथ रहते रहे।



एनी 'मौमा' हैन्डरसन उनके पिता की माँ थीं। बेली और माया ने यह सफर अकेले ही तय किया। उनकी बाज़ुओं पर बिल्ले लगा दिए गए थे जो यह बताते थे कि वे कौन हैं और कहाँ जा रहे हैं। डब्बे में बैठे दूसरी सवारियों को महज तीन और चार साल के अकेले बैठे इन नन्हों पर बड़ा तरस आया। माया को याद रहा कि उन्होंने बच्चों को खाने के लिए "तली मुर्गी और आलू का सलाद दिया था।"

सैग्रिगेशन (पृथकतावाद)

पृथकतावाद वह व्यवस्था है जिसमें विभिन्न समूहों को एक-दूसरे से अलग-थलग रखा जाता है। 1960 के दशक तक भी अमरीका के दक्षिणी राज्यों में काले लोगों को 'जिम क्रो' कानूनों द्वारा गोरों से अलग रखा जाता था। इन कानूनों के कारण गोरे और काले बच्चे अलग-अलग स्कूलों में पढ़ते थे।

काले लोगों को अपने ही अलग मुहल्लों में रहना पड़ता था। अलग ही रेस्त्रां में खाना पड़ता था, अलग नलों से पानी पीना पड़ता था और सिनेमाघरों में अलग हिस्से में बैठना पड़ता था। बसों में कालों को पिछले हिस्से में सवारी करनी पड़ती थी, जबकि गोरे अगले हिस्से में बैठते थे।

1964 और 65 में कुछ नए कानून लागू किए गए, जैसे नागरिक अधिकार कानून और मताधिकार कानून, जिनसे पृथकतावाद गैर-कानूनी करार दिया गया।





मौमा सख्त थीं पर प्यार करने वाली महिला थीं। उनका आग्रह रहता कि बेली और माया तमीज़ से पेश आएं, हर इतवार गिरजे जाएं और दुकान में मदद करें। माया दुकान का फर्श बुहारती और ग्राहकों को खाना परोसने में भी मदद करती। मौमा यह भी चाहती थीं कि माया और बेली खुद को बिलकुल साफ रखें।

“हर रात कड़ाके की ठण्ड में भी ...हम कुंए पर जाते और बर्फीले साफ पानी से नहाते-धोते,” माया ने बताया।

इधर चाचा विलि इस बात पर नज़र रखते कि उनकी भतीजी और भतीजा अपना दिमाग विकसित करें। वे उन्हें पहाड़े याद करवाते और जितनी हो सके उतनी किताबें पढ़ने को उकसाते। डट कर पढ़ने पर मौमा अपनी पोती-पोते की तारीफ करतीं। कभी-कभी वे लाड़ से माया को अपनी ‘नन्ही प्रोफेसर’ कहा करती थीं।



चाचा विलि और मौमा के कारण माया को छोटी उम्र में ही शब्दों से प्यार हो गया।

माया का चहेता लेखक था विलियम शेक्सपियर। पर वे यह भी कहती थीं कि सभी लेखक उनके दोस्त थे।

स्टैम्पस् में बिताए इन चार सालों में बेली ही माया का सबसे अच्छा दोस्त था। वे लगभग अपना सारा खाली समय साथ-साथ बिताते, छुपम-छिपाई और नेता करता वैसा कर जैसे खेल खेलते। बेली कभी-कभार दुकान के मर्तबान से अचार चुरा लाता, पर हमेशा माया के साथ बांट कर ही उसे खाता।

माया का कद लम्बा था, उसका रंग अपने भाई से ज़्यादा गहरा, और बाल स्टील से बनी कड़क ऊन जैसे थे। कई बार बड़े लोग माया से उसके मुँह पर ही कह देते कि वह भद्दी है। उसके रंग-रूप पर दिल दुखाने वाली दूसरी टिप्पणियाँ भी करते। बेली हमेशा अपनी बहन का बचाव करता, बुरा लगने पर उसे बेहतर महसूस करवाने की कोशिश करता। इस कारण माया अपने भाई से और भी प्यार करने लगी थी। "मेरी दुनिया में सबसे महान इन्सान बेली ही था," माया ने बाद में कहा।



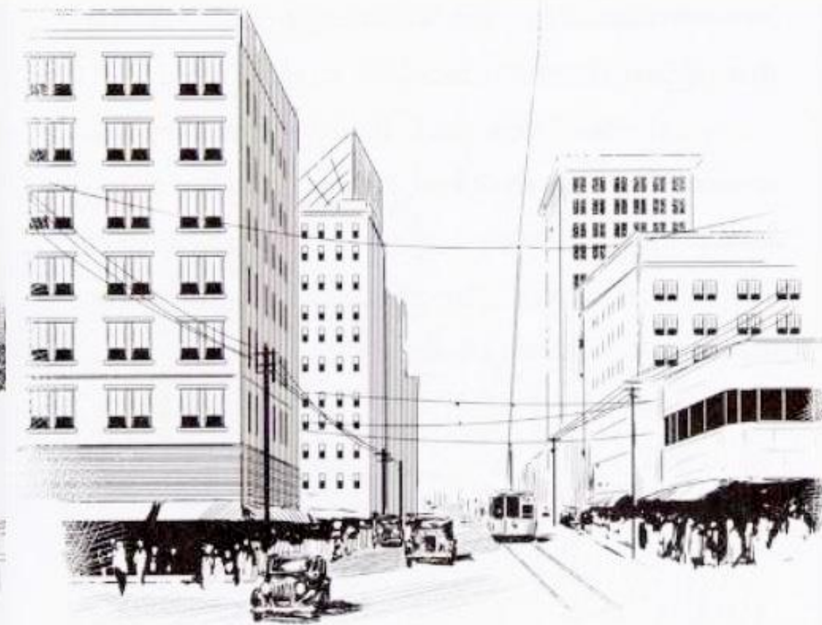
अध्याय 2

बच्ची जिसकी आवाज़ ही गुम हो गई

1935 की एक सुबह माया के पिता स्टैम्पस् आ पहुँचे। वे अपने बच्चों से मिलने आए थे। उन्होंने तीन सप्ताह वहाँ बिताए। लौटते वक्त वे माया और बेली जूनियर को उनकी माँ से मिलाने अपने साथ सेंट लूईस, मिसूरी ले गए।



सेंट लूईस, आर्केन्सॉ के छोटे से ग्रामीण कस्बे स्टैम्पस् से बिलकुल फर्क था। वहाँ बड़ी-बड़ी इमारतें थीं, पक्की सड़कें थीं। माया ने बाद में कहा कि वह उसे 'विदेश' जैसा लगा था। उसे शहर की गहमागहमी की आदत जो नहीं थी।



शुरुआत में माया और बेली एक बड़े से घर में माँ विवियन, नानी बैक्स्टर और तीन मामाओं - टूट्टी, टॉम और ईरा के साथ रहे।

माया की माँ बेहद खूबसूरत स्त्री थीं, जो घर में कम ही रहती थीं। बेली और माया उन्हें तब ही देख पाते जब वे स्थानीय शराबखाने में उनसे मिलतीं। विवियन ज्यूकबॉक्स पर बज रहे गीतों पर नाचतीं।

"मुझे माँ पर तब ही सबसे ज़्यादा प्यार आता," माया ने अपनी माँ के बारे बताते हुए कहा था। "वे एक सुन्दर पतंग-सी थीं जो मानो मेरे सिर के ऊपर तैरती हो।"

स्कूल में माया और बेली की गिनती अच्छे छात्रों में होती, क्योंकि उन्होंने स्टैम्पस् में रहते हुए खूब पढ़ा-लिखा था। माया अपना शनिवार किताबघर में बिताती। उसे अच्छा लगता कि उस दिन वह बिना किसी रुकावट के दिन भर पढ़ सकती थी।



"किताबघर और किताबें मानो मुझसे कहती थीं "हम यहाँ हैं, हमें पढ़ो," माया ने बाद में उन दिनों को याद करते हुए बताया।

करीब छह महीने बाद विवियन और बच्चे विवियन के प्रेमी के घर रहने चले गए। माया और बेली उन्हें मिस्टर फ्रीमैन कहते थे।

एक दिन जब घर में कोई नहीं था मिस्टर फ्रीमैन ने माया से नाजायज़ हरकत की। उन्होंने उसके गुप्तांगों को छुआ। माया महज सात साल की थी।



वह इस कदर सकते में आ गई कि कई दिनों तक बिस्तर पकड़े रही। उसने इस वारदात की बात सिर्फ अपने भाई बेली को बताई। बेली अपनी बहन के लिए बिलख-बिलख कर रोया।

बेली ने माँ को सब बता दिया। विवियन ने पुलिस से शिकायत की। मिस्टर फ्रीमैन को गिरफ्तार कर लिया गया। पर सिर्फ एक ही दिन बाद रिहा भी कर दिया। कुछ ही दिन बीते होंगे कि एक पुलिसवाला उनके घर आया। उसने परिवार को बताया कि फ्रीमैन मरा पड़ा मिला था। किसीने उसकी हत्या कर दी थी।

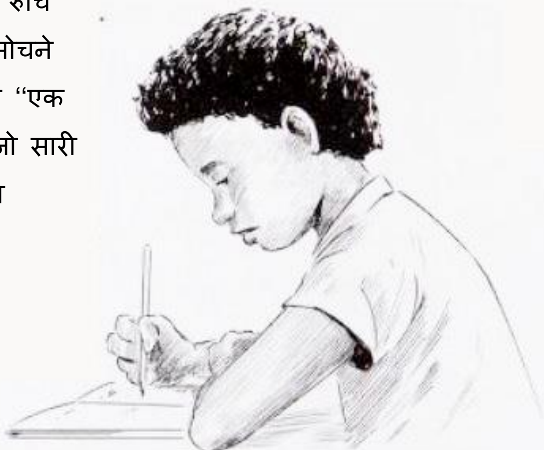
माया को विश्वास ही नहीं हुआ। उसे लगा कि मिस्टर फ्रीमैन की मौत इसलिए हो गई क्योंकि उसने बेली को जो कुछ घटा था वह बता दिया था। माया यह समझने के लिए बहुत छोटी थी कि उसने कुछ भी गलत नहीं किया था। बल्कि उसने बेली को फ्रीमैन की करतूत बताकर बिलकुल सही किया था। पर माया के नादान मन में यह बात बैठ गई कि उसके शब्दों ने मिस्टर फ्रीमैन की हत्या कर दी है। उसने तय किया कि वह अब से बोलेगी ही नहीं, चुप रहेगी। वह नहीं चाहती थी कि किसी दूसरे इन्सान को उसके शब्दों से नुकसान हो। उसने स्कूल में बोलना बन्द कर दिया, अपनी माँ, अपनी नानी और मामाओं से बोलना बन्द कर दिया। यहाँ तक कि बेली तक से बोलचाल बन्द कर दी! विवियन अपनी बेटी की इस चुप्पी से परेशान हो गई। वह समझ ही नहीं पाई कि माया किस कदर दुखी और सदमाग्रस्त है। परेशान हो विवियन ने माया और बेली को वापस स्टैम्पस् भेज दिया।



अगले पाँच बरसों तक माया किसी से नहीं बोली। पर बेली दोनों के हिस्से की बातें करता रहा। वह सेंट लूईस में उनकी ज़िन्दगी के बारे में मज़ाकिया किस्से गढ़ कर सुनाता। वह लोगों से कहता ‘‘वहाँ के तरबूज़ गाय

के खेपड़े से भी दुगने बड़े होते हैं और चाशनी से भी ज़्यादा मीठे।''

इधर माया अपने विचारों और भावनाओं को डायरियों में दर्ज करने लगी। कविता से उसे प्यार हो गया और पढ़ने-लिखने में उसकी रुचि बढ़ती गई। वह सोचने लगी कि वह खुद ''एक विशाल कान है जो सारी ध्वनियों को सोख लेता है।''



''मैं कमरे में घुसती और उसकी सारी ध्वनियों को निगल जाती,'' माया ने बाद में कहा। ''मैंने न जाने कितने कवियों को रट लिया।''

आखिरकार स्टैम्पस् में परिवार की एक करीबी दोस्त बर्था फ्लावर्स ने माया की गुम हो चुकी आवाज़ को फिर से तलाशने में उसकी मदद की। बर्था शिक्षित महिला थीं। एक दिन उन्होंने माया को अपने घर बुलाया।

वहाँ उन्होंने मशहूर लेखक चार्ल्स डिकन्स के उपन्यास *अ टेल ऑफ टू सिटीस्* का कुछ हिस्सा माया को पढ़ कर सुनाया। माया इस उपन्यास को पहले पढ़ चुकी थी, पर बर्था के उसे पढ़ कर सुनाने से उसके शब्दों में जादू घुल गया। वे उसे इस तरह पढ़ रही थीं मानो गा रही हों।



चार्ल्स डिकन्स (1812-1870)



चार्ल्स डिकन्स उन्नीसवीं सदी के अंग्रेज़ी में लिखने वाले सबसे लोकप्रिय लेखक थे। उन्होंने अपने जीवन में पंद्रह उपन्यास और सैकड़ों कहानियाँ लिखीं।

डिकन्स का अधिकांश लेखन गरीबों की ज़िन्दगी की तकलीफों पर ध्यान केन्द्रित करता है।

उनके उपन्यास *ऑलिवर ट्विस्ट* ने उनके समय में ही लंदन, इंग्लैण्ड में अनाथों के साथ हो रहे भयानक बरताव को उभारा।

उनकी विख्यात रचनाओं में *ग्रेट एक्सपैक्टेशन्स्, अ टेल ऑफ टू सिटीस्* और *अ क्रिसमस कैरल* शामिल हैं।

ब्रितानवी संस्कृति में उनके योगदान को स्वीकार चार्ल्स डिकन्स को वैस्टमिनिस्टर एबी में कवियों के लिए आरक्षित स्थान में दफनाया गया। उस जगह जहाँ 1066 से ही शाही विवाह, राज्याभिषेक और राज परिवार के लोग दफनाए जाते रहे हैं।

"कागज़ पर दर्ज किए गए शब्दों के मानी दरअसल उनसे कहीं ज़्यादा होते हैं," बर्था ने माया को समझाया। "इन्सान की आवाज़ उन शब्दों में अर्थ के गहरे रंग भर देती है।"

बर्था ने जो कहा उसे माया ने दिल में बसा लिया। जल्द ही वह खुद बर्था को कविताएं और किताबें पढ़ कर सुनाने लगी। जब माया ने 1940 में लाफायत ट्रेनिंग स्कूल से आठवीं की परीक्षा पूरी की वह फिर से बोलने लगी थी!

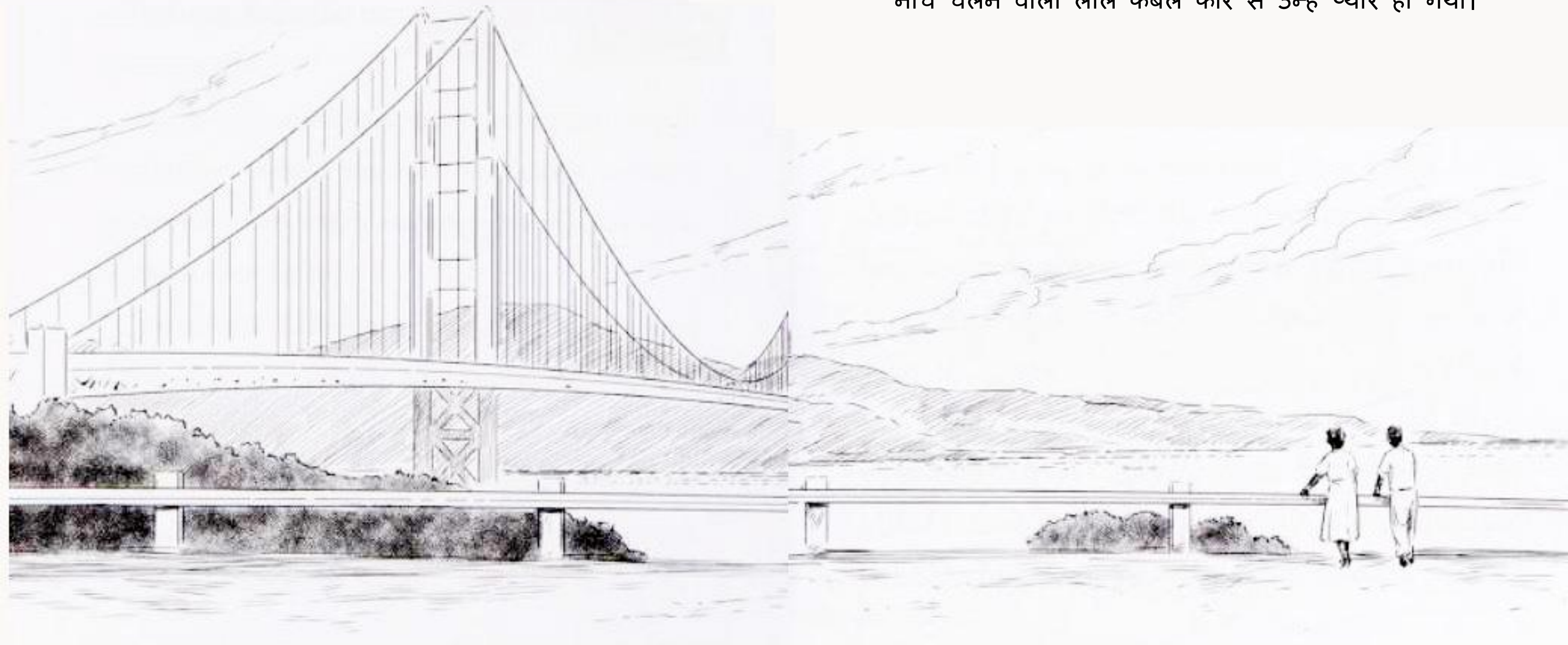
अध्याय 3

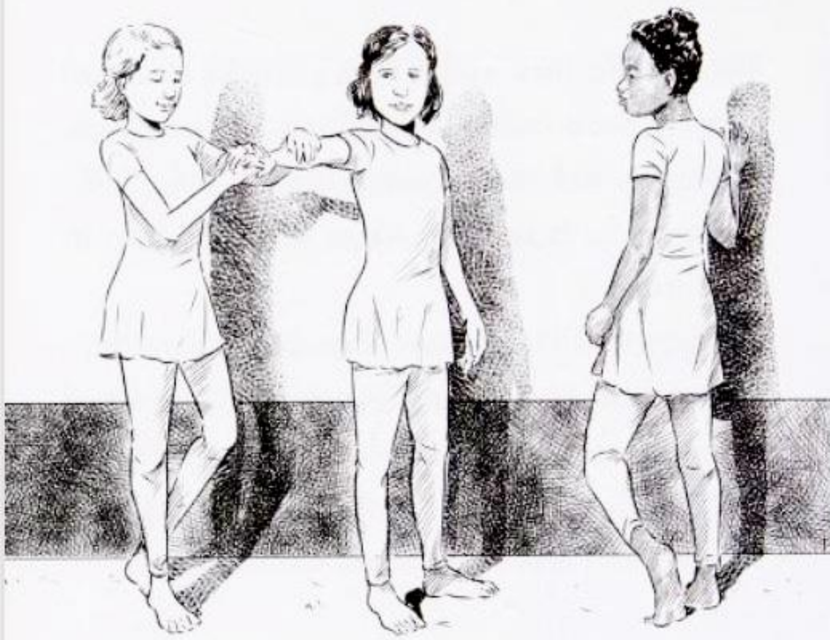
कैलिफोर्निया में बिताए साल

1941 में मौमा ने तय किया कि माया और बेली को विवियन के साथ रहना चाहिए। उस वक्त विवियन कैलिफोर्निया के सैन फ्रांसिस्को शहर में रहने लगी थी।

मौमा को लगा कि पश्चिमी तट पर बच्चों को बेहतर स्कूलों में पढ़ने का मौका मिल सकेगा। क्योंकि स्टैम्पस् में गोरे लोग कालों के साथ अब भी न्यायपूर्ण बरताव नहीं करते थे। मौमा का मानना था कि वे कैलिफोर्निया में अधिक सुरक्षित रहेंगे।

माया तेरह और बेली चौदह वर्ष का हो चुका था। उन्हें सैन फ्रांसिस्को पसंद आया। खाड़ी के पास बने घर में रहना उन्हें अच्छा लगने लगा। वहाँ का प्रसिद्ध गोल्डन गेट ब्रिज और शहर की पहाड़ी सड़कों पर ऊपर-नीचे चलने वाली लाल केबल कार से उन्हें प्यार हो गया।





डैडी क्लाइडल स्नेही और उदार इन्सान थे। माया और बेली उन्हें अपना पिता ही मानने लगे थे। उनके असली पिता भी अब कैलिफोर्निया में रहने लगे थे और कभी-कभार बच्चों से मिलने आते थे। एक बार वे बच्चों को घुमाने मैक्सिको भी ले गए।

माया और बेली बड़े हो रहे थे। इस दौरान बेली का मन पढ़ाई-लिखाई और स्कूल से उचट गया। उसका उठना-बैठना ऐसे बच्चों के साथ हुआ जो ख़ुराफाती थे और कभी तो स्कूल से ही गायब हो जाते थे। बेली, अपनी माँ, विवियन के साथ लड़ने-झगड़ने भी लगा। उसे यह सहन नहीं होता था कि कोई उसे यह कहे कि उसे कितने बजे घर लौटना है, या पूछे कि वह क्या करता है। एक दिन माँ के साथ बुरी तरह झगड़ने के बाद बेली घर से भाग गया।

माया अब हाई स्कूल में थी, वह पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करती रही। साथ ही उसने एक नृत्य कार्यक्रम में दाखिल होने की कोशिश की। उसने स्थानीय कॉलेज में शाम को होने वाली नृत्य कक्षाओं के लिए छात्रवृत्ति जीत ली।

अपने खाली समय में माया पढ़ती और अपनी कविताएं और कहानियाँ भी रचती। इधर उनकी माँ विवियन ने फिर से शादी कर ली थी। बच्चे उस व्यक्ति को डैडी क्लाइडल कहते थे। वे एक सफल व्यापारी थे।

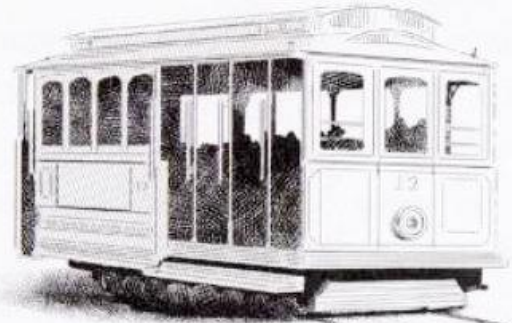


बेली के जाने से माया मानो बिखर गई। उसे स्कूल का काम करने में दिक्कत होने लगी। उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता और उसे लगातार बेली की याद सताती। माया ने तय किया कि वह कुछ समय के लिए पढ़ाई से छुट्टी लेगी और कोई काम तलाशेगी। महीनों रेलगाड़ी के दफ्तरों में चक्कर लगाने के बाद माया को केबल-कार कण्डक्टर का काम मिला।

माया सैन फ्रांसिस्को शहर की पहली अफ्रीकी-अमरीकी कण्डक्टर बनी। उस वक्त उसकी उम्र महज पंद्रह साल थी।



सैन फ्रांसिस्को की केबल-कार



1873 में ईजाद की गई केबल-कार दिखने मे रेलगाड़ी की तरह लगती है पर सैन फ्रांसिस्को की सड़कों पर यांत्रिक रेलगाड़ी की तरह चलती है। हर साल तकरीबन 7 करोड़ लोग इसमें सवारी करते हैं। हालांकि कुछ स्थानीय लोग इसका उपयोग काम पर जाने और घर लौटने के लिए करते हैं, पर आजकल इसमें सफर करने वाले अधिकतर लोग शहर देखने आए सैलानी ही होते हैं। पहले यह केबल-कार तेइस मार्गों पर चला करती थी, पर अब सिर्फ तीन मार्गों पर ही चलती है।

माया एक पूरे सिमेस्टर तक केबल कार कन्डक्टर का काम करती रही। पर तब उसे लगा कि पढ़ाई पूरी करना भी ज़रूरी है। घर से भाग जाने के बाद बेली अमरीकी मर्चेन्ट मरीन में भर्ती हुआ। जहाज़ों का यह दल नौसेना की मदद के लिए था। वह अपनी बहन को ख़त लिखने लगा। माया अपने भाई से फिर से जुड़ बेहद खुश थी।

माया ने हाई स्कूल में अच्छा प्रदर्शन किया। पर वह स्कूल के अंतिम वर्ष में गर्भवती हो गई। इसके बावजूद उसने पढ़ाई जारी रखी। 1945 में सतरह वर्ष की उम्र में उसने स्कूली पढ़ाई पूरी की। इसके तीन सप्ताह बाद उसने अपने बेटे क्लाइड बेली जॉनसन को जन्म दिया। पर माया उसे “गाय” पुकारती थी। माया और बच्चे का पिता दरअसल आपस में शादी नहीं करना चाहते थे। सो माया जानती थी कि उसे अपने बेटे का पालन-पोषण अकेले ही करना है।



अध्याय 4

बड़ा मौका



अगले सात वर्षों तक माया अपने बेटे को पालने के लिए वेट्रेस और बावर्ची की तरह काम करती रही। इस दौरान उसने अधिकतर समय सैन फ्रांसिस्को के छोटे से अपार्टमेंट में रहते गुज़ारा। पर कुछ समय वह लॉस एंजलीस में और स्टैम्पस् में मौमा के साथ भी रही। अपनी व्यस्त ज़िन्दगी में भी वह जब भी समय मिलता कविताएं रचती और किताबें भी पढ़ती रही।

1950 में जब माया बाईस वर्ष की हुई उसे संगीत की एक दुकान में काम मिला। यहाँ काम करते हुए उसकी मुलाकात एक नाविक टॉश एंजलोस् से हुई।



माया और टॉश दोनों को संगीत बेहद पसन्द था। टॉश को गाय के साथ समय बिताना भी अच्छा लगता था। उसने गाय को शतरंज और बेसबॉल खेलना सिखाया।

मुलाकात के कुछ ही समय बाद माया और टॉश ने शादी कर ली - शायद कुछ ज़्यादा ही जल्दबाज़ी में। कुछ ही समय में माया को अहसास हो गया कि उसमें और टॉश में उतनी समानता नहीं थी जितना उसने सोचा था। इस कारण दोनों ने तलाक ले लिया। माया ने तलाक के बाद एन्जलोस् नाम जारी रखा, पर एक छोटे से बदलाव के साथ। उसने अंतिम अक्षर 'एस' को बदल का 'यू' कर दिया। इसलिए क्योंकि उसे लगा कि यह नाम अनोखा है। उसने तय किया कि वह अब से माया एंजलो नाम से जानी जाएगी।

माया संगीत की दुकान में काम करना बन्द कर चुकी थी। अब वह सैन फ्रैंसिस्को के एक लोकप्रिय नाइट क्लब, *पर्पल अनियन*, में कैलिप्सो गाने और नाचने का काम करने लगी। माया ने हाई स्कूल

में नाचना सीखा था। फिर भी शुरुआत में उसे नाचने-गाने में घबराहट होती थी। उसने बताया, "मैं घबराहट के मारे थर्राती थी। लगता मानो अबाबीलें मेरे पेट में गोते लगा रही हों।" पर काम शुरू कर देने पर उसने जल्द ही यह पाया कि वह दरअसल बड़ी ही सहजता से नाच-गा सकती है।

माया का कद लम्बा था, पैर बेहद खूबसूरत और नाचने के लिए एकदम सही थे। हालांकि माया ने गाने की औपचारिक शिक्षा नहीं ली थी, उसकी आवाज़ गहरी और भावपूर्ण थी।



कैलिप्सो संगीत

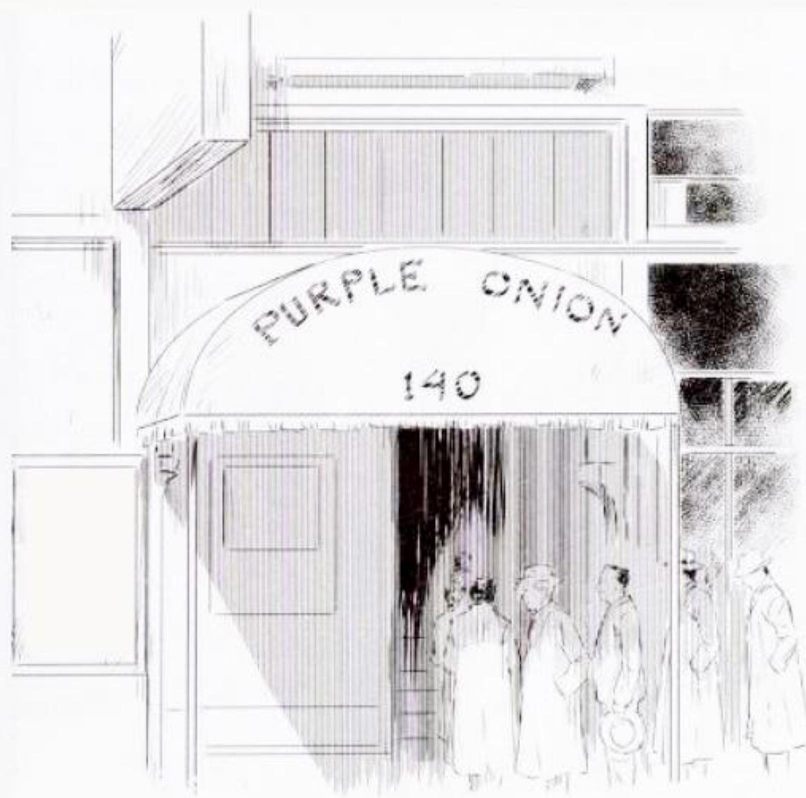


कैलिप्सो संगीत की शुरुआत ट्रिनिडैड और टोबैगो द्वीप देश में उन्नीसवीं शताब्दी में हुई थी। इधर पश्चिम अफ्रीका से लाए गए गुलाम अपना काइसो संगीत शताब्दियों पहले कैरिबियन द्वीपों में अपने साथ ला चुके थे। ये लयें और धुनें समय के साथ आधुनिक जोशीले कैलिप्सो संगीत में तब्दील हुईं।

कैलिप्सो संगीत के इतिहास के सबसे मशहूर सितारा थे ट्रिनिडैड के गायक लॉर्ड किचनर। एल्डविन रॉबर्टस् (1922-2000) नाम से जन्मे लॉर्ड किचनर, *ग्रीन फिग* और *जम्प इन द लाइन* जैसे गीतों के लिए विख्यात हुए।



कुछ ही समय में माया का कार्यक्रम मशहूर हो गया। *पर्पल अनियन* के बाहर दर्शकों की लम्बी कतारें लगने लगीं। वे चकाचौंध कर देने वाली इस महिला को देखने को आतुर रहते। माया अपने रचे गीतों को संगीत दे गाती। अपनी ही कविताओं के शब्दों को कैलिप्सो की धुनों में पिरोती।



खबरनवीस उससे साक्षात्कार देने का आग्रह करते। उसे रेडियो और टेलिविज़न कार्यक्रमों में भी बुलाया जाने लगा। माया की ख्याति बढ़ रही थी।

एक शाम कुछ पेशेवर कलाकार माया को नाचते-गाते देखने आए। वे एक नाटक मण्डली से जुड़े थे जो जगह-जगह सफर कर अपना गीति-नाटक *पोर्गी एण्ड बैस* प्रस्तुत करते थे।

यह गीति-नाटक दक्षिण कैरोलाइना के चार्ल्सटन कस्बे में रहने वाले अफ्रीकी-अमरीकियों के जीवन पर आधारित था।

नाटक के प्रभारियों में से एक माया के नाच-गान से इतना प्रभावित हुआ कि उसने माया से अनुरोध किया कि वह भी एक किरदार के चयन में भागीदारी करे। माया ने चयन में हिस्सा लिया और उसे चुन लिया गया। माया की माँ, विवियन भी इस बात के लिए तैयार हो गई कि वह माया की गैर-हाज़िरी में गाय की देखभाल की ज़िम्मेदारी उठाएगी।



हालांकि माया नौ वर्ष के गाय को छोड़ने की बात से दुखी थी, फिर भी उसे लगा कि वह यह मौका गंवा नहीं सकती। सो वह *पोर्गी एण्ड बैस* के अभिनेता दल में शामिल हो गई। मण्डली यूरोप व उत्तरी अफ्रीका के बाईस देशों में जाने वाली थी। वे दुनिया भर के रंगमंचों पर प्रदर्शन करने वाले थे। माया उत्साह से भर उठी!

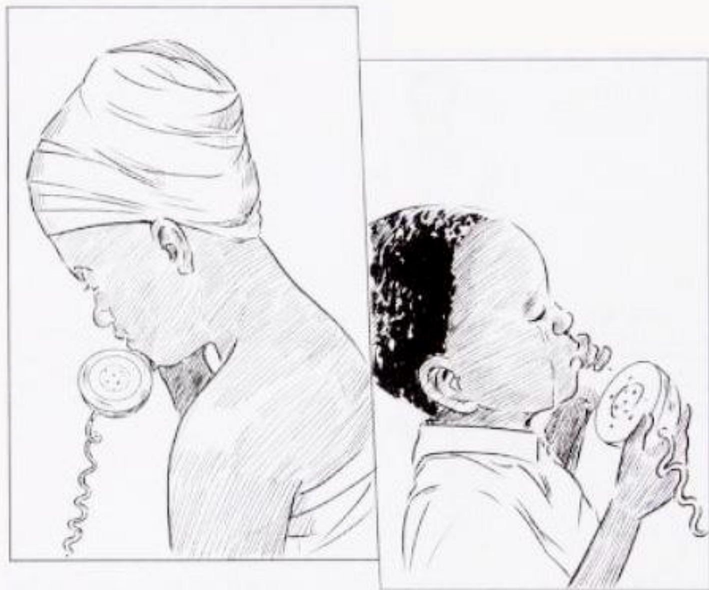
अध्याय 5

लेखिका बनना



पोर्गी एण्ड बैस की मण्डली के साथ दुनिया का सफर करना माया को बेहद अच्छा लगा। वे कनाडा, इटली, फ्रांस, मिस्र और अफ्रीका के दूसरे हिस्सों में गए। वे ठसाठस भरे विशाल मंचों पर अपना नाटक खेलते। लोग खड़े हो करतल ध्वनि से उनके अभिनय की तारीफ़ करते।

माया ने पाया कि वह विदेशी भाषाओं को सहजता से सीख पाती है। उसने यात्राओं के दौरान फ्रांसीसी और इतालवी में बोलना सीखा। वह जिस भी शहर में जाती उसे वहाँ की संस्कृति के बारे में जानने-सीखने में मज़ा आता।



पर साथ ही माया को अपने बेटे गाय की याद भी सताती थी। जब भी वे फोन पर बात करते, हर बार दोनों ही रो पड़ते। यों सफर करते साल भर बीत गया।

तब एक दिन माया को अपनी माँ का ख़त मिला। उन्होंने लिखा कि गाय बीमार पड़ गया है। उसके शरीर में चकत्ते उभर आए हैं। डॉक्टरों के इलाज से भी वह ठीक नहीं हो रहा। माया फौरन अपने बेटे के पास लौट आई।

सैन फ्रांसिस्को लौट माया अपने बेटे की तीमारदारी में जुट गई। वह घंटों उसे पढ़ कर कुछ सुनाती, उसे बाग में हवाखोरी के लिए ले जाती, उसका मनपसन्द खाना पकाती। उसने अपने बेटे से यह वादा किया कि अगर उसे भविष्य में कहीं जाना ही पड़ा तो हमेशा उसे अपने साथ ही लेकर जाएगी।



“मैं कसम खाती हूँ, मैं तुम्हें छोड़ कर कभी नहीं जाऊंगी,” उसने गाय से कहा। “अगर कहीं जाना ही पड़े तो तुम भी मेरे साथ चलोगे। मैं अकेले जाऊंगी ही नहीं।”

जिस वक्त माया सैन फ्रांसिस्को में गाय की तीमारदारी में जुटी थी उसे अपने भाई बेली के बारे में परेशान करने वाली ख़बर मिली। वह चुराया हुआ सामान बेचने के जुर्म में न्यू यॉर्क में कैद था।

कुछ समय माया कैलिफोर्निया में ही रहती रही और स्थानीय नाइटक्लबों में नाचती-गाती रही। पर 1957 में उसे एक रिकॉर्ड बनाने का मौका मिला। उसके एल्बम का नाम था *मिस कैलिप्सो*।



पर इस सफलता के बावजूद माया को लगता रहा कि नाचना-गाना उसका असली पेशा नहीं है।

इन सालों के दौरान भी माया लगातार कविताएं लिखती रही थी। साथ ही उसने हमेशा अपनी डायरी भी लिखी थी। वह जानती थी कि वह लेखक ही बनना चाहती है। वह अपने जीवन में कई कठिन दौरों से गुज़री थी। पर माया ने इसके बावजूद माफ करना और प्रेम करते जाना भी सीखा था।

वह अपने उम्मीद से सराबोर संदेश को लेखन के माध्यम से दूसरों के साथ साझा करना चाहती थी।

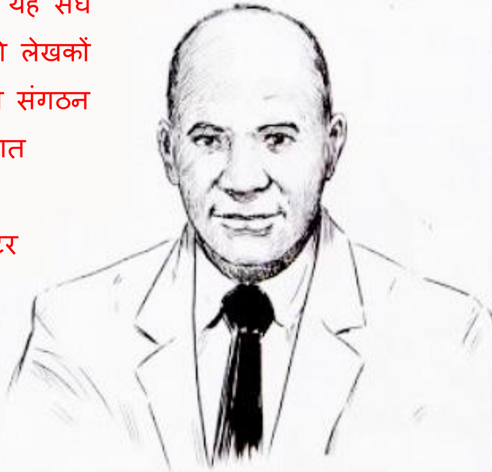
जिस समय माया की मुलाकात न्यू यॉर्क के प्रसिद्ध लेखक जॉन ऑलिवर किलैन्स से हुई माया और गाय लॉस एंजलीस में रह रहे थे। जॉन की एक किताब पर फिल्म बनाई जा रही थी, वे फिल्म की पटकथा लिखने लॉस एंजलीस आए हुए थे। माया ने जॉन से अनुरोध किया कि वे उसकी कुछ कविताएं और कहानियाँ पढ़ें। जॉन माया की प्रतिभा से बेहद प्रभावित हुए। उन्होंने माया को सलाह दी कि उसे न्यू यॉर्क आ जाना चाहिए और हारलम राइटर्स गिल्ड (लेखक संघ) से जुड़ना चाहिए।



हारलम राइटर्स गिल्ड

हारलम दरअसल न्यू यॉर्क शहर का एक बड़ा मुहल्ला है। बीसवीं सदी की शुरुआत से ही यह काले अमरीकी समुदाय के कलात्मक जीवन और संस्कृति का केन्द्र रहा है।

हारलम लेखक संघ का गठन 1950 में हुआ और जॉन ऑलिवर किलैन्स उसके सह-संस्थापक थे। शुरुआत में उसके मूल सदस्य हारलम की किसी भी दुकान के सामने या ब्रुकलिन में जॉन के घर पर मिला करते थे। यह संघ अफ्रीकी-अमरीकी लेखकों का सबसे पुराना संगठन है। इसके विख्यात सदस्यों में टैरी मैकमिलन, वॉल्टर डीन मायर्स व माया एंजलो शामिल हैं।



जॉन ऑलिवर किलैन्स



जब माया 1959 में पहली बार न्यू यॉर्क आई वह कुछ दिनों तक जॉन और उनकी पत्नी ग्रेस के साथ रही। तब उसने अपने और गाय के लिए घर तलाश लिया। जल्द ही माया को एक नाइटक्लब में गाने का काम मिल गया। इससे मकान का किराया और रहने का खर्चा निकल आता था। सबसे बड़ी बात यह थी कि माया को दिन में लिखने का समय भी मिल जाता था।

“शुरुआत में मैंने खुद को छोटे शब्द चित्रों (स्कैच) तक सीमित रखा,” माया ने अपने आरंभिक लेखन के बारे में बताते हुए कहा। “तब गीतों के बोल तक, इसके बाद ही मैंने छोटी कहानियाँ लिखने की हिम्मत की।”

माया ने नाटक और कविताओं की भी रचना की। जब पहली बार माया ने हारलम लेखक संघ की बैठक में अपना लिखा नाटक *वन लव, वन लाइफ* पढ़ कर सुनाया वह काफी घबराई हुई थी। उसके हाथ पसीने से लथपथ थे और जीभ मानो फूल गई थी। नाटक पढ़ कर सुनाने के बाद वह प्रतिक्रियाओं का इन्तज़ार करने लगी। उपस्थित सदस्यों ने कहा कि उसका लेखन बहुत ही घटिया है।



माया सकते में आ गई। वह आहत हुई और नाराज़ भी। बाद में समूह के एक सदस्य जॉन क्लार्क ने माया से बात की। उन्होंने समझाया, “इस समूह में हम एक-दूसरे को यह याद दिलाते रहते हैं कि महज प्रतिभा ही काफी नहीं होती। तुम्हें खूब मेहनत करनी होगी।”

माया ने उनके सुझाव को दिल में उतारा। वह उम्दा लेखक बनना चाहती थी। अब वह जान गई थी कि अपने सपने को सच्चाई में तब्दील करने के लिए उसे कड़ी मेहनत करनी होगी।

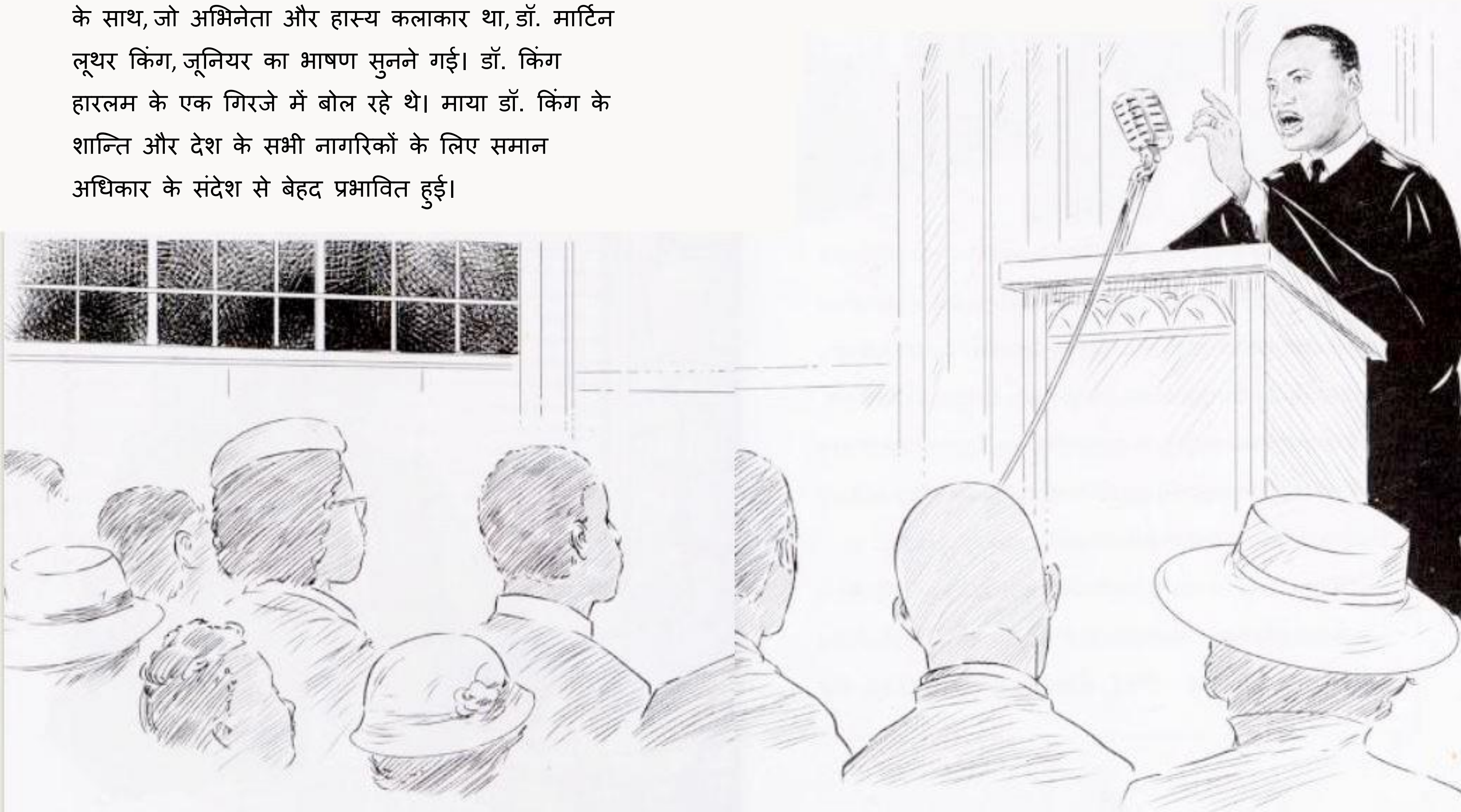


अध्याय 6

नागरिक अधिकारों की पैरवी

1960 के एक दिन माया अपने मित्र गॉडफ्रे केम्ब्रिज के साथ, जो अभिनेता और हास्य कलाकार था, डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर का भाषण सुनने गई। डॉ. किंग हारलम के एक गिरजे में बोल रहे थे। माया डॉ. किंग के शान्ति और देश के सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार के संदेश से बेहद प्रभावित हुई।

डॉ. किंग का कहना था कि चमड़ी का रंग चाहे कैसा भी क्यों न हो हरेक इन्सान के अधिकार समान होने चाहिए। माया और गॉडफ्रे ने तय किया कि वे डॉ. किंग के संगठन सदर्न क्रिश्चियन लीडरशिप कॉन्फरेन्स (एससीएलसी) के लिए वित्त जुटाने के लिए एक 'शो' करेंगे। डॉ. किंग की संस्था अमरीका में कालों को नागरिक अधिकार दिलवाने की मुहिम में जुटी थी।



नागरिक अधिकार क्या होते हैं ?





नागरिक अधिकार दरअसल वे आज़ादियाँ हैं जो कोई सरकार अपने नागरिकों को देती है। अमरीका का संविधान इन अधिकारों की गारंटी देता है और उनकी सुरक्षा भी करता है। इन अधिकारों में बोलने की आज़ादी, मत देने का अधिकार और किसी भी धर्म का पालन करने की आज़ादी शामिल हैं। अमरीकी संविधान का एक भाग है जो 'बिल ऑफ राइटस् कहलाता है, इसमें इन अधिकारों का खुलासा किया गया है।

अमरीकी गृहयुद्ध के बाद जब गुलामी को खत्म कर दिया गया, गुलाम आज़ाद कर दिए गए, तब भी कालों को ये नागरिक अधिकार नहीं दिए गए। उन्हें मत देने का अधिकार भी नहीं था। उनके बच्चों तक को सबसे साधनहीन स्कूलों में गोरे बच्चों से अलग रखा जाता था। उन्हें सबसे कम भुगतान वाले रोज़गारों तक सीमित रखा जाता था।

1950 के दशक की शुरुआत से ही इस अलगाव और भेदभाव को खत्म करने के लिए एक राष्ट्रीय आंदोलन शुरू हो गया था। कालों के लिए नागरिक अधिकारों के इस आंदोलन को बाद में एक युवा काले पादरी डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने नेतृत्व दिया। अहिंसक विरोध के द्वारा, जैसे केवल गोरों के लिए आरक्षित रेस्त्रां के सामने धरना देना आदि से नागरिक अधिकारों के सक्रियकर्मी आखिरकार संयुक्त राज्य अमरीका में कानूनों को बदलने का दबाव बना सके और देश के सभी नागरिकों को समान अधिकार दिलवा सके।



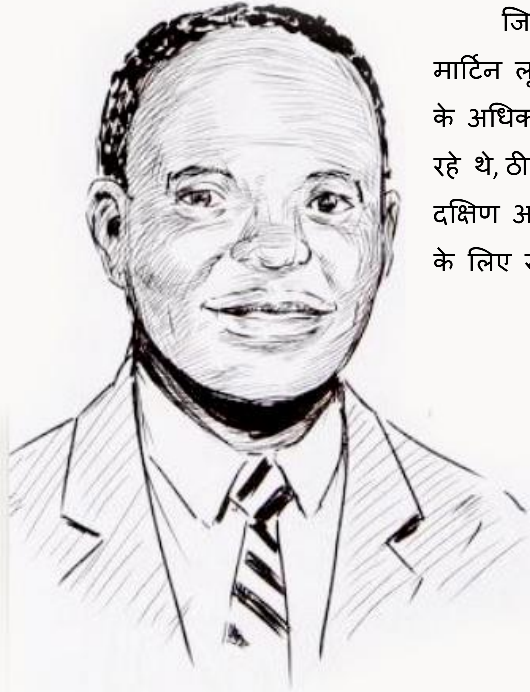
डॉ. किंग के समूह एससीएलसी ने माया को अपना क्षेत्रीय समन्वयक बनने को कहा। माया ने बखुशी प्रस्ताव को स्वीकार किया। उसकी ज़िम्मेदारियों में वित्त इकट्ठा करना, स्वयंसेवकों की व्यवस्था करना और एससीएलसी की प्रवक्ता के रूप में बोलना शामिल था। काम शुरू करने के दो महीनों बाद माया व्यक्तिगत रूप से डॉ. किंग से मिली। उन्होंने माया को उसकी कड़ी मेहनत के लिए शुक्रिया अदा किया। तकरीबन इसी समय माया की पहली कहानी भी क्यूबा की एक पत्रिका *रैवल्यूश्योन्* में प्रकाशित हुई।

माया और गॉडफ्रे ने अपने 'शो' को *कैबरे फॉर फ्रीडम* का नाम दिया। न्यू यॉर्क के एक जैज क्लब में आयोजित इस 'शो' में तमाम काले गायक, नर्तक, संगीतकार शामिल किए गए। पहले ही दिन से इसे भारी सफलता मिली। अगले पाँच सप्ताह तक यह लगातार लोकप्रिय बना रहा। इन प्रदर्शनों से डॉ. किंग की संस्था के लिए नौ हज़ार डॉलर इकट्ठे किए जा सके।



माया ने बाद में टिप्पणी की थी कि, इस बात से कि कहानी केवल क्यूबा में पढ़ी जाएगी और शायद हिस्पानी भाषा में होगी, उसकी नज़र में यह तथ्य कमतर नहीं हुआ कि वह प्रकाशित लेखकों की सूची में शुमार हो चुकी है।

1960 में न्यू यॉर्क की एक दावत में माया का परिचय दक्षिण अफ्रीका के वुसूम्ज़ी 'वुस' मेक से हुआ। दक्षिण अफ्रीका में उस वक्त गोरों की सरकार थी जिसने अपने देश के कालों को कोई अधिकार नहीं दिए थे।



जिस तरह अमरीका में डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर कालों के अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे, ठीक उसी तरह वुस भी दक्षिण अफ्रीका के काले समुदाय के लिए संघर्षरत थे।

वुस, संयुक्त राष्ट्र संघ के सामने अपने देश में लागू नस्लभेद की नीति के बारे में बताने अमरीका आए थे। क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ दुनिया भर में शान्ति और मानव अधिकारों के मुद्दों की पैरवी करता है।

माया और वुस की फौरन ही दोस्ती हो गई। जल्द ही वे साथ रहने लगे। वुस दुनिया भर में मानव अधिकारों पर बात करने के वास्ते यात्रा करते रहे।

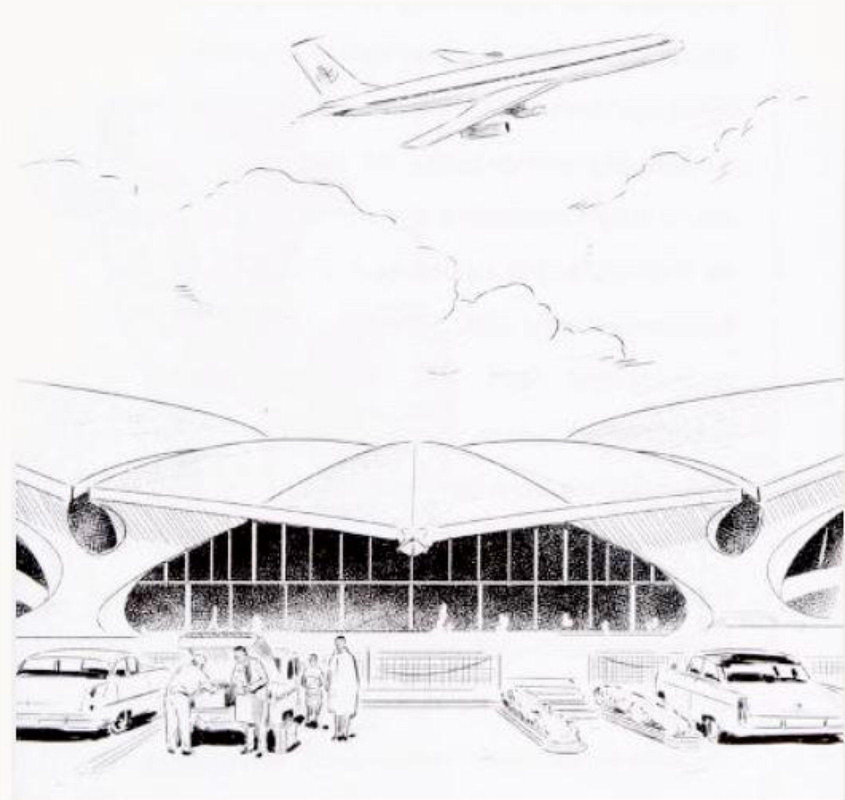


माया ने एससीएलसी के लिए काम करना बन्द कर दिया। उसने अपने एक मित्र के साथ एक नया संगठन बनाया - *कल्चरल एसोसिएशन फॉर विमेन ऑफ एफ्रिकन हैरिटेज* (सीएडब्ल्यूएएच)। यह संगठन अमरीका और दक्षिण अफ्रीका में मानव अधिकारों को समर्थन देने का काम करता था। अफ्रीकी विरासत की महिलाओं के इस सांस्कृतिक संघ में काम करते हुए माया की मुलाकात एक अन्य नामचीन नागरिक अधिकारों के पैरोकार मैल्कम एक्स से हुई।

हालांकि माया उनसे बहुत ही कम समय के लिए मिली वह उनकी ऊर्जा और कटिबद्धता से हैरत में पड़ गई। मैल्कम का मानना था कि कालों को अपनी अफ्रीकी विरासत पर गर्व करना चाहिए।

साल भर से भी कम समय न्यू यॉर्क में बिताने के बाद वुस ने माया से कहा कि वह उसके साथ मिस्र के कायरो शहर में रहने चले। उसकी योजना थी कि वह कायरो में अफ्रीका के अन्य देशों के स्वतंत्रता सेनानियों से मिले, जो अपने देश को आज़ादी दिलवाना चाहते थे और उनके साथ काम करे। माया हमेशा ही नए अनुभवों को पाने के लिए आतुर रहती थी।

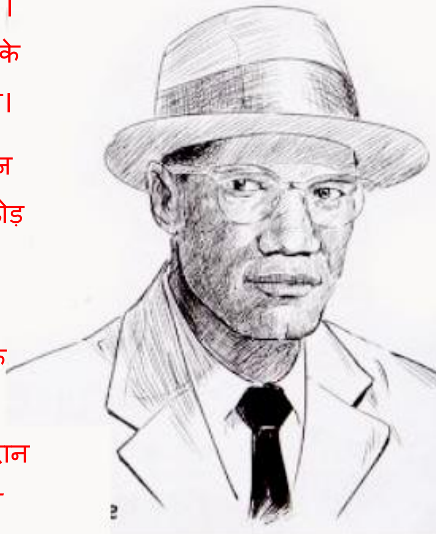
सो वह एक बार फिर अमरीका छोड़ने को तैयार हो गई। पर इस बार वह अपने बेटे गाय को साथ लेती गई, जैसा उसने सालों पहले वादा किया था।



मैल्कम एक्स (1925-1965)

मैल्कम एक्स का जन्म मैल्कम लिटिल के नाम से ओमाहा, नेब्रास्का में हुआ था। मैल्कम नागरिक अधिकारों के अग्रणी नेताओं में से एक थे।

बचपन में मैल्कम तेज़ छात्र थे, पर उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। वे नशीले पदार्थों का इस्तेमाल करने लगे, उन्होंने चोरी-चपाटी भी की। चोरी के जुर्म में सात वर्षों तक कैद भी रहे। कैद में रहने के दौरान मैल्कम *नेशन ऑफ इस्लाम* नामक एक धार्मिक नागरिक अधिकार समूह से जुड़े। 1952 में कैद से रिहा होने के बाद उन्होंने अपना उपनाम एक्स रख लिया, क्योंकि उन्हें लगा कि 'लिटिल' एक गुलाम नाम था।



मैल्कम प्रभावी वक्ता थे और मानते थे कि कालों को भी सभी नागरिक अधिकार मिलने चाहिए, "किसी भी तरीके से," जिसमें हिंसक तरीके भी शामिल थे। मैल्कम के विचार डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर के शान्तिपूर्ण विरोध से उलट थे।

पर 1960 के दशक के मध्य में मैल्कम ने अपने विचार बदले। उन्हें लगने लगा कि कालों को नागरिक अधिकार हिंसा से नहीं मिल सकते, बल्की शान्तिपूर्ण विरोध द्वारा ही मिल सकेंगे। नेशन ऑफ इस्लाम के नेतृत्व के बारे में भी उनके मन में सवाल उठने लगे थे।



उन्होंने इस समूह से नाता तोड़ा और *आर्गनाइज़ेशन ऑफ एफ्रो-अमेरिकन युनिटी* (ओएएयू) नामक नया संगठन खड़ा किया। 21 फरवरी 1965 के दिन नेशन ऑफ इस्लाम के तीन संदस्यों ने न्यू यॉर्क में गोली दाग कर उनकी हत्या कर दी। उस वक्त वे महज उनचालीस बरस के थे।

अध्याय 7

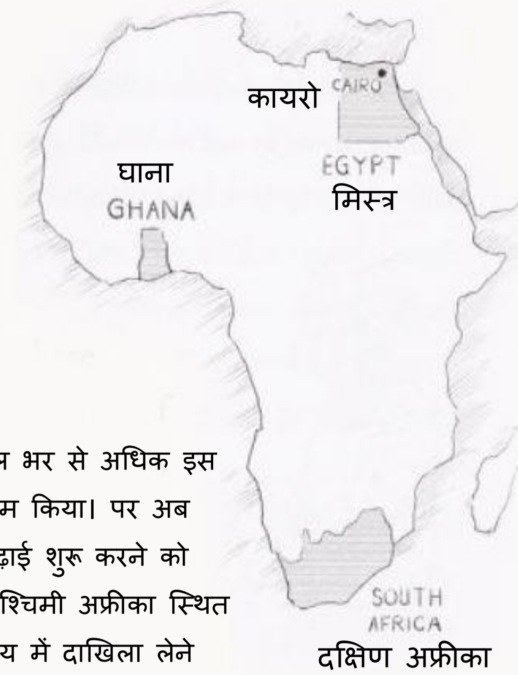
घर से दूर एक घर

जब माया और गाय 1961 में कायरो पहुँचे उन्होंने पाया कि शहर की सड़कें गाड़ियों, लोगों ... बकरियों गधों और ऊँटों से खचाखच ठसी हैं।

उन्होंने वाहन चालक से पूछा क्या आज कोई खास त्यौहार है। चालक ने जवाब दिया, "नहीं कायरो हर दिन ऐसा ही होता है।" माया और गाय को यह चहल-पहल बड़ी अच्छी लगी। उन्हें यह अहसास भी जल्दी ही हो गया कि देश कोई सा भी क्यों न हो, लोग बहुत अलग नहीं होते। "लोग हंसते हैं, रोते हैं, खाते-पीते हैं, फिक्र करते हैं, और मरते भी हैं," माया ने लिखा था। "अगर हम एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें, हम दोस्त भी बन सकते हैं।"



वुस ने परिवार के लिए कायरो में एक आरामदेह घर किराए पर लिया था। पंद्रह वर्षीय गाय उस हाई स्कूल में पढ़ने लगा जो शहर के बाहर चन्द मिनटों की दूरी पर था। माया और वुस अपना दिन युगांडा, केन्या और दूसरे अफ्रीकी देशों के स्वतंत्रता सेनानियों के साथ बैठकें या बातचीत करने में बिताते। मिस्र आने के कुछ महीनों बाद माया को एक अंग्रेज़ी पत्रिका *अरब ऑब्ज़र्वर* में संपादन का काम मिल गया। वे अफ्रीकी महाद्वीप के सभी देशों की घटनाओं पर लेख लिखने और संपादित करने लगीं।



माया ने साल भर से अधिक इस पत्रिका के लिए काम किया। पर अब गाय कॉलेज की पढ़ाई शुरू करने को तैयार था। उसने पश्चिमी अफ्रीका स्थित घाना विश्वविद्यालय में दाखिला लेने का मन बनाया। माया ने तय किया कि वह भी गाय के साथ अकरा में रहने जाएगी ताकि गाय वहाँ पढ़ सके। इधर वुस कायरो में ही बना रहा।



जब माया और गाय घाना पहुँचे, उन्हें ऐसा महसूस हुआ मानो वे तो उसी देश के हैं। घाना स्वतंत्र देश था। 1957 में वह उपनिवेशवादी शासक ग्रेट ब्रिटेन से आज़ादी पाने वाला पहला अफ्रीकी देश था। 1962 तक घाना के सभी कालों को, संयुक्त राज्य अमरीका और दुनिया के अन्य देशों के विपरीत, समान अधिकार मिल चुके थे।

अकरा पहुँचने के कुछ ही दिनों बाद गाय एक भयानक कार दुर्घटना में घायल हुआ। उसकी गरदन तीन जगहों से टूटी, और उसके हाथ-पैरों की हड्डियाँ भी।



अगले दो महीनों तक गाय अस्पताल में रहा। माया हर दिन, बिना नागा, अपने बेटे के पास जाती रही। आख़िरकार उसकी हालत सुधरने लगी और वह घाना विश्वविद्यालय में अपनी पढ़ाई शुरू कर सका।

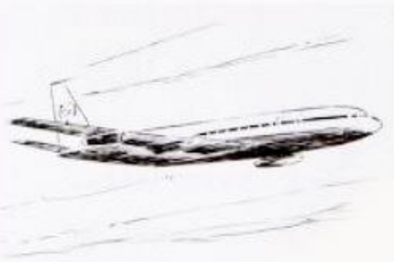
इधर माया को विश्वविद्यालय में ही कार्यालय सहायक का काम मिल गया। इस तरह वह अपने बेटे की देखभाल जारी रख सकी क्योंकि गाय अब भी पूरी तरह ठीक नहीं हो सका था। माया ने *घानियन टाइम्स* नामक अख़बार के लिए लिखना भी आरंभ किया। उसने हारलम लेखक संघ के अपने उन पुराने मित्रों से सम्पर्क साधा, जो घाना में आ बसे थे। ये थे जुलियन मेफील्ड और उनकी पत्नी डॉ. एना लिविया कोरडेरो।



एक रात जुलियन और एना ने माया को एक दावत में बुलाया जहाँ माया को मैल्कम एक्स से फिर से मिलने का मौका मिला। मैल्कम अमरीका लौटने से पहले अपने दोस्तों से मिलने अकरा आए थे।

मैल्कम ने न्यू यॉर्क लौटने के बाद माया को घाना में एक ख़त लिखा। माया ने डॉ. किंग के लिए जो काम किया था वह उन्हें याद था। सो उन्होंने माया से पूछा कि क्या वह न्यू यॉर्क लौट कर मैल्कम द्वारा स्थापित संगठन ओएएयू के लिए काम करने के बारे में सोचेगी।

माया ने मसले पर गाय से चर्चा की। दोनों को लगा कि काम बेहद ज़रूरी है, इसलिए माया को यह ज़रूर करना चाहिए। इधर गाय अब उन्नीस बरस का हो चुका था, वह आत्मनिर्भर बनने को तैयार भी था। सो उसने घाना में पढ़ाई जारी रखी और माया अकेले ही अमरीका लौट गई। 1965 में जब वह लौटी तब तक वह चार वर्ष विदेश में रह चुकी थी। वह घर लौटने को तैयार थी।



अध्याय 8

लेखक के रूप में मशहूर

माया सैंतीस साल की हो चुकी थी। न्यू यॉर्क में मैल्कम की संस्था में अपना काम शुरू करने के पहले उसने अपनी माँ और भाई से मिलना तय किया। सो वह घाना से सैन फ्रैंसिस्को आई जहाँ उसकी माँ अब भी रहती थी। बेली कैद से रिहा होने के बाद हवाई में बावर्ची का काम करता था। वह भी माँ और बहन से मिलने चला आया।



दोनों भाई-बहन ख़तों के ज़रिए सम्पर्क में बने रहे थे, पर उन्हें रू-ब-रू मिले अर्सा गुज़र चुका था।

माया ने एक सप्ताहान्त अपनी माँ और भाई के साथ गुज़ारा। उन्होंने खूब बातें कीं, हंसी-मज़ाक किया। बचपन की मीठी यादें ताज़ा कीं। तब 21 फरवरी 1965 की इतवार को सुबह एक दिल दहलाने वाली ख़बर मिली। मैल्कम एक्स की हत्या हो गई थी। वे हारलम में अपने संगठन ओएएयू के बारे में बोल रहे थे, जब उन्हें गोली मारी गई।



ख़बर ने माया को सकते में डाल दिया। उसके पास न्यू यॉर्क जाने का अब कोई कारण ही नहीं बचा था। सो वह बेली के साथ हवाई चली गई। वहाँ उसने छह महीनों तक एक नाइट क्लब में गायिका का काम किया। तब वह कैलिफोर्निया चली गई जहाँ गाय स्नातक बनने के बाद रहने आ गया था।





अगले दो सालों में माया ने न्यू यॉर्क में रहते हुए दो नाटक लिखे। वह कविताएं भी लिखती रही। तब एक रात वह कार्नेगी हॉल में डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर का वक्तव्य सुनने गई। भाषण के बाद वह अपने दोस्तों के साथ डॉ. किंग से मिली। डॉ. किंग ने माया से पूछा कि क्या वह उनके लिए फिर से काम करना चाहेगी। इस बार वे चाहते थे कि माया देश भर में सफर करे और स्थानीय गिरजों में जा लोगों को आंदोलन में सहयोग देने को कहे। माया ने उनका प्रस्ताव मान लिया।

4 अप्रेल 1968 के दिन माया अपनी चालीसवीं सालगिरह की दावत में जाने को तैयार हो रही थी। डॉ. किंग के लिए कुछ ही दिनों बाद उसे काम शुरू करना था। अचानक उसका एक मित्र घर आया। उसने ख़बर दी कि डॉ. किंग की मैम्फिस, टैनेसी में गोली मार कर हत्या कर दी गई है।

माया के वहाँ आने के कुछ ही समय बाद गाय जिस खड़ी गाड़ी में बैठा था उसे एक ट्रक ने टक्कर मार दी। गाय की गरदन फिर से टूटी। माया एक बार फिर हर दिन अपने बेटे की तीमारदारी करने अस्पताल जाती रही। जब गाय फिर से पूरी तरह ठीक होने लगा माया न्यू यॉर्क लौट गई। वह फिर से हारलम लेखक संघ के साथ जुड़ी और उसने लिखना शुरू किया। वह लेखन को अपना पेशा बनाने पर आमादा थी।


DR KING FATALLY SHOT
BY ASSASSIN IN MEMPHIS



डॉ. किंग की मौत से माया मानो टूट ही गई। वह कई हफ्तों तक अपने घर से नहीं निकली। उसके साथियों को लगा कि उसने फिर से बोलना बन्द कर दिया है, जैसा बचपन में उसके साथ हो चुका था। अन्ततः हारलम लेखक संघ के एक दोस्त, जेम्स बॉल्डविन ने माया को उसकी गहरी उदासी से उबरने में मदद की।

जेम्स बॉल्डविन (1924-1987)

जेम्स आर्थर बॉल्डविन उपन्यासकार, निबन्धकार व नाटककार थे। वे अमरीका में नस्ल के मसले पर लिखा करते थे।



जेम्स का जन्म न्यू यॉर्क के हारलम मुहल्ले में हुआ था। उन्होंने 1948 में एक साहित्यिक पुरस्कार जीता जिसके तहत उन्हें फ्रांस जाकर लिखने का मौका मिला।

फ्रांस में रहने के दौरान उन्होंने एक आत्मकथात्मक, यानी उनकी खुद की ज़िन्दगी पर आधारित एक उपन्यास की रचना की - *गो टैल इट टू द माउन्टेन्स*। इस उपन्यास ने उन्हें प्रसिद्धी दी।

जेम्स बाद में अमरीका लौटे और नागरिक अधिकार आंदोलन से जुड़े। उन्होंने अनेक उपन्यास और कहानियाँ प्रकाशित कीं।

जेम्स बॉल्डविन और माया के दूसरे दोस्तों ने माया को प्रेरित किया कि वह भी अपनी जीवन गाथा लिखे। उन्होंने कहा कि उसे उन तमाम घटनाओं को साझा करना चाहिए कि वह किस तरह बेइन्तहा पीड़ा और हताशा के दौरों से गुज़री और उनसे उबरी।

माया ने उनकी सलाह मानी और अपनी पहली आत्मकथा लिख डालने का निर्णय लिया। उन्होंने अपनी इस रचना का नाम रखा *आई नो व्हाय द केज्ड बर्ड सिंग्स्* । यह शीर्षक दरअसल पॉल लॉरेन्स की कविता *सिम्पैथी* की एक विख्यात पंक्ति है। कविता उस पिंजड़े में कैद चिड़िया के बारे में है जो आज़ाद होना चाहती है। माया ने इस शीर्षक को इसलिए चुना क्योंकि उन्हें भी कई बार लगता रहा था कि वे भी एक पिंजड़े में कैद हैं। वे उत्पीडन, नस्लवाद, गरीबी और क्रूरता के इस पिंजड़े से मुक्त होना चाहती थीं।



माया ने अपने बचपन की जो कहानियाँ साझा करीं वे उदासी से भरी थीं, पर साथ ही उम्मीद से लबरेज़ भी। माया मानती थीं कि ज़िन्दगी कितनी भी कठोर क्यों न हो, लोग उन स्थितियों में भी बचे रह सकते हैं और खुश रहना सीख सकते हैं।



यह पुस्तक 1969 में प्रकाशित हुई और एक बेस्ट सैलर बनीं। माया अब एक मशहूर लेखिका बन चुकी थी।

अध्याय 9

हम सबकी नायिका

जब माया का पहला कविता संकलन *जस्ट गिव मी अ कूल ड्रिंक ऑफ वॉटर 'फोर आई डाऽऽऽई* प्रकाशित हुआ वे न्यू यॉर्क में रह रही थीं। संकलन उनकी आत्मकथा के महज दो वर्षों बाद ही प्रकाशित हुआ था। संकलन की अडतीस कविताएं अमरीका में एक काली स्त्री होने के अनुभव को अभिव्यक्त करती हैं। उनकी ये कविताएं पढ़ने के बजाए पढ़ कर सुनाने के लिए रची गई थीं।



"मैं आवाज़ के लिए लिखती हूँ, आँखों के लिए नहीं," उन्होंने कहा था।

माया की कविता *हारलम हॉपस्कॉच* (हारलम पहल-दूज) काले बच्चों द्वारा झेली जाने वाली कठिनाइयों को संबोधित करती है।

एक घर बढ़, फिर जा कूद! धरती है बेहद गरम।
जिनके पास हैं चीज़ें, हैं उनका जीवन अच्छा।
फिर से जा कूद, अबकी बार बाएं।
इंसा है हरेक, सिर्फ अपने वास्ते।
अब हैं हवा में, अब दोनों पैर नीचे।
चूंकि तू है काली, करना ना देर।
खाना हुआ खत्म, किराया भी है बाकी।
बक दे तू गाली और ले रो,
तब कूद जा घर तू दो।

जस्ट गिव मी अ कूल ड्रिंक ऑफ वॉटर 'फोर आई डाऽऽऽई को 1972 में पुलित्ज़र पुरस्कार के लिए नामित किया गया। संयुक्त राज्य अमरीका में यह किसी लेखक को दिया जाने वाला सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार है। इसी वर्ष माया पहली अफ्रीकी-अमरीकी महिला बनीं जिनकी लिखी पटकथा पर फिल्म बनाई गई हो। फिल्म *जॉर्जिया जॉर्जिया* एक काली युवती की कहानी है जो एक गोरे पुरुष से प्रेम करने लगती है। फिल्म की पटकथा लिखने के अलावा माया ने इस फिल्म को संगीत भी दिया।

हालांकि माया अब बेहद व्यस्त रहने लगी थी, फिर भी उन्होंने ब्रॉडवे नाटक *लुक अवे* में अभिनय करने का समय निकाला। नाटक में उनके अभिनय के लिए उन्हें टोनी पुरस्कार के लिए नामित किया गया, जो अमरीका में रंगकर्मियों को दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है।

माया एक ख्यातनाम लेखिका का जीवन जी रही थीं। वे हर दिन सोलह घंटे लिखा करती थीं। साथ ही वे यात्राएं भी करतीं और शानदार दावतों में शरीक होतीं। लंदन की एक यात्रा के दौरान माया की मुलाकात पॉल दू फू से हुई। वे ब्रितानवी लेखक और कार्टूनिस्ट थे।

वे जल्दी ही एक-दूसरे से प्यार करने लगे और उन्होंने शादी कर ली। इस वक्त माया पैंतालीस वर्ष की हो चुकी थीं और दुनिया भर में मशहूर थीं। माया और पॉल कैलिफोर्निया आए और सैन फ्रांसिस्को के पास रहने लगे।



दोनों ही अपना ज़्यादातर समय लिखने में बिताते। माया के बेटे गाय का विवाह भी हो चुका था और उसका खुद का भी एक बेटा था - कॉलिन। गाय का परिवार माया और पॉल के काफी करीब ही रहता था।

1977 में माया को टेलिविज़न की एक लघु श्रृंखला *रूटस्* में एक भूमिका मिली। यह कार्यक्रम अमरीका में गुलामी के इतिहास पर था। माया ने इसमें एक नानी न्यो बोटो का किरदार निभाया। उसके अभिनय के लिए उसे एमी पुरस्कार के लिए नामित किया गया।



रूटस्

रूटस् टेलिविज़न की वह लघु श्रृंखला थी जिसका प्रसारण 1977 में शुरू हुआ था। कार्यक्रम कुन्टा किन्टे और उसके परिवार की जीवन यात्रा का बयान करता है। इसमें 1750 में किन्टे के पश्चिम अफ्रीका में जन्म, उसकी धर-पकड़ से लेकर गुलाम बनाए जाने और अंततः दो सौ वर्ष बाद उसके वंशजों के आज़ाद होने तक के घटनाक्रम को दर्शाया गया था।



तेरह करोड़ से अधिक अमरीकी *रूटस्* को देखते थे। दर्शकों की यह संख्या उस समय अमरीका की आधी आबादी से भी अधिक थी। इसकी गिनती अब तक की सफलतम लघु श्रृंखला में की जाती है।

रूटस् को 36 एमी पुरस्कारों के लिए नामित किया गया। श्रृंखला का अंतिम प्रसारण अमरीकी टेलिविज़न के इतिहास में सबसे अधिक देखे जाने वाले कार्यक्रमों की सूची में तीसरे पायदान पर है।

1978 में माया की तीसरी किताब, एक कविता संकलन *एण्ड स्टिल आई राइज़* प्रकाशित हुआ। इसमें माया की सबसे प्रसिद्ध कविता *स्टिल आई राइज़* शामिल है।



यह कविता कुछ ऐसे शुरू होती है:

तुम इतिहास में मुझे नीचा जता सकते हो,
अपने कड़वे, तोड़े-मरोड़े झूठों के साथ,
तुम मुझे माटी की तरह पैरों तले रौंद सकते हो,
पर मैं फिर भी उठूंगी ऊपर, धूल की तरह।

1981 में माया और पॉल ने आठ साल साथ बिताने के बाद तलाक ले लिया। हालांकि वे दोस्त बने रहे। सच यह था कि एक जोड़े की तरह ज़िन्दगी बिताने के लिए दोनों बेहद व्यस्त थे।

इन वर्षों में माया अमरीका के विभिन्न विश्वविद्यालयों में भाषण देने, कविता पाठ करने जाती रहीं। वे ऐसी लेखिका थी जिन्हें लोग पसन्द करते थे। वे जिससे भी मिलतीं उससे स्नेह से बोलतीं और ईमानदारी से मुस्कुराती थीं।

अपने भाषणों में माया वह सब साझा करती जो उन्होंने निजी अनुभवों से सीखा था। वे शान्ति और एकता का संदेश देतीं थीं।



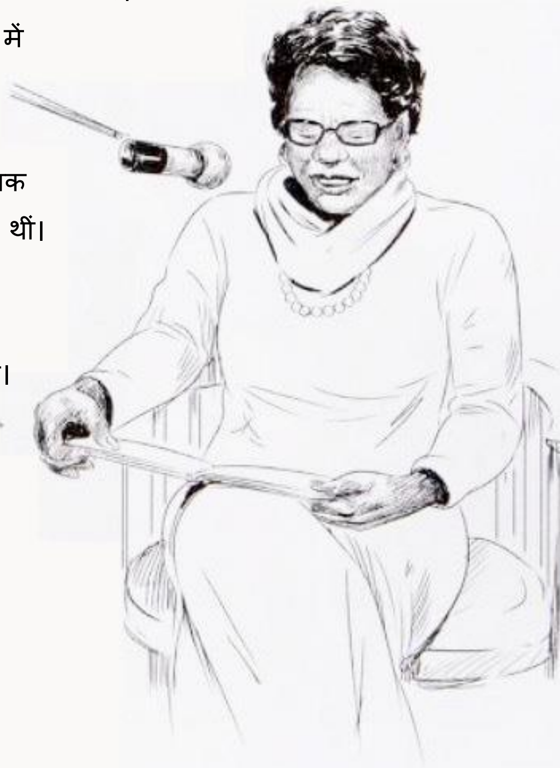
“ऐसा हो नहीं सकता कि अच्छे लोगों से मिलने से आप उकता जाएं,” माया कहतीं। “मैंने सीखा है कि किसी अपरिचित की मुस्कान के पीछे एक दोस्त छिपा हो सकता है।”

कुछ समय बाद माया ने नॉर्थ कैरोलाइना के विन्स्टन-सलेम स्थित वेक फॉरेस्ट विश्वविद्यालय में अमेरिकन स्टडीस् के प्रोफेसर का पद स्वीकार लिया। अधिकांश कॉलेज प्रोफेसर डॉक्टरेट, या कम से कम स्नातक डिग्रीधारी होते हैं। पर माया तो कभी कॉलेज ही नहीं गई थीं!



नॉर्थ कैरोलाइना के छात्रों को इतिहास और कविता पढ़ाने के साथ माया ने अपना लेखन जारी रखा। कॉलेज की डिग्री न होने के बावजूद माया के पास अपने छात्रों से साझा करने को पर्याप्त जीवन अनुभव था। ‘‘मैं ऐसी लेखिका नहीं हूँ जो पढ़ाती भी है,’’ उन्होंने एक बार कहा था। ‘‘मैं ऐसी शिक्षिका हूँ जो लिखती भी है।’’

आने वाले तीस बरसों तक माया ने देश भर में असंख्य भाषण दिए, कविता पाठ किए। वे अपनी वार्ताओं में मुआफ़ करने के महत्व और इन्सान की आत्मिक ताकत पर बोलती थीं। उनकी संगीतमय आवाज़ लोगों को मुग्ध कर देती थी।



लोग माया की इज़्ज़त इसलिए भी करते थे क्योंकि वे कई बार निराशा के दौरों से गुज़रने के बावजूद हर बार उबर सकी थीं। उन्होंने कभी हार नहीं मानी। वे कभी कड़ुवाहट से नहीं भरीं। बल्की वे सौम्य, सदय और स्नेहमय बनी रहीं। वे अपने शब्दों में, अपने काम में, पूरी जान लगाती थीं। लोग उनकी रूहानी ताकत और जज़्बे से प्रेरित होते थे।

1993 में माया को राष्ट्रपति बिल क्लिन्टन के पदग्रहण समारोह में अपनी कविता *ऑन द पल्स ऑफ मॉर्निंग* उपस्थित मेहमानों के सामने पढ़ कर सुनाने का सम्मान मिला।



माया ने इस कविता को रचने में दिन-रात मेहनत की। हालांकि अपने अंतिम रूप में इस कविता में महज सड़सठ शब्द हैं, माया ने इसे पूरा करने के पहले दो सौ से अधिक पन्ने भरे! यह कविता तत्काल लोकप्रिय हुई। यह कविता लोगों को भविष्य के प्रति आशावान बने रहने को प्रोत्साहित करती है, फिर चाहे अतीत कितना भी तकलीफदेह क्यों न रहा हो।

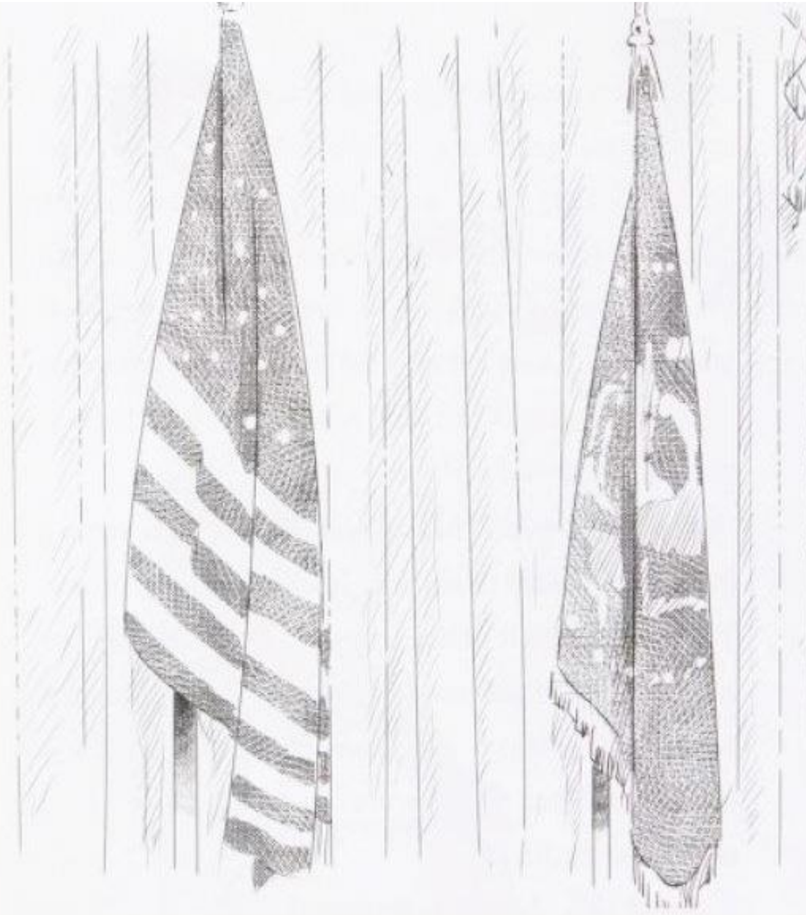
राष्ट्रपति क्लिन्टन को कविता का एक-एक शब्द पसन्द आया। उन्होंने कहा, ''वे पाँच वर्ष तक मौन-मूक रहीं पर तब उन्होंने इस धरा की सबसे बुलन्द आवाज़ विकसित की।''

माया के पहले प्रसिद्ध कवि रॉबर्ट फ्रॉस्ट अकेले व्यक्ति थे जिन्हें किसी राष्ट्रपति के पदग्रहण समारोह में कविता पाठ करने का मौका मिला था। और यह तीस साल पहले हुआ था।



टेलिविज़न की मशहूर मेज़बान ओप्रा विनफ्रे से माया की मज़बूत दोस्ती हुई। वे अपनी घनिष्ठता को जताने के लिए एक-दूसरे को 'माँ-बहन-दोस्त' कहा करते थे। माया ने कई बार ओप्रा के लोकप्रिय टेलिविज़न कार्यक्रम में शिरकत की। इससे दर्शकों का एक विशाल समूह माया के लेखन और विचारों से परिचित हो पाया।

सन् 2000 में माया को नैशनल मेडल ऑफ आर्टस् से नवाज़ा गया। 2005 में उन्होंने राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश के लिए *अमेज़िंग पीसः अ क्रिसमस पोएम* की रचना की। यह कविता उन्होंने व्हाइट हाउस के क्रिसमस ट्री के उद्घाटन समारोह में प्रस्तुत की।



2010 में राष्ट्रपति बराक ओबामा ने उन्हें प्रसिडैन्शियल मेडल ऑफ फ्रीडम से सम्मानित किया। यह सम्मान किसी सामान्य नागरिक को, जो सेना से जुड़ा न हो, दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है।



सम्मान समारोह के दौरान कहा गया कि माया का लेखन सिखाता है कि ‘‘हमें विभाजन के परे उठ अपनी दुनिया के सौन्दर्य का सम्मान करना चाहिए।’’

पर सबसे अहम बात यह थी कि माया लगातार लोगों को यह सिखाती रहीं कि हरेक इन्सान व्यक्तिगत त्रासदियों और कठिनाइयों से उबर कर एक सार्थक जीवन बिता सकता है। माया का संदेश हमेशा ही प्रेम, उम्मीद और साहस का रहा।

उनका विख्यात कथन था, ‘‘मैंने यह जाना है कि लोग यह भूल जाएंगे कि आपने क्या कहा था। उन्हें यह याद नहीं रहेगा कि आपने क्या किया था। पर वे यह कभी नहीं भूलेंगे कि आपने उन्हें कैसा महसूस करवाया था।’’

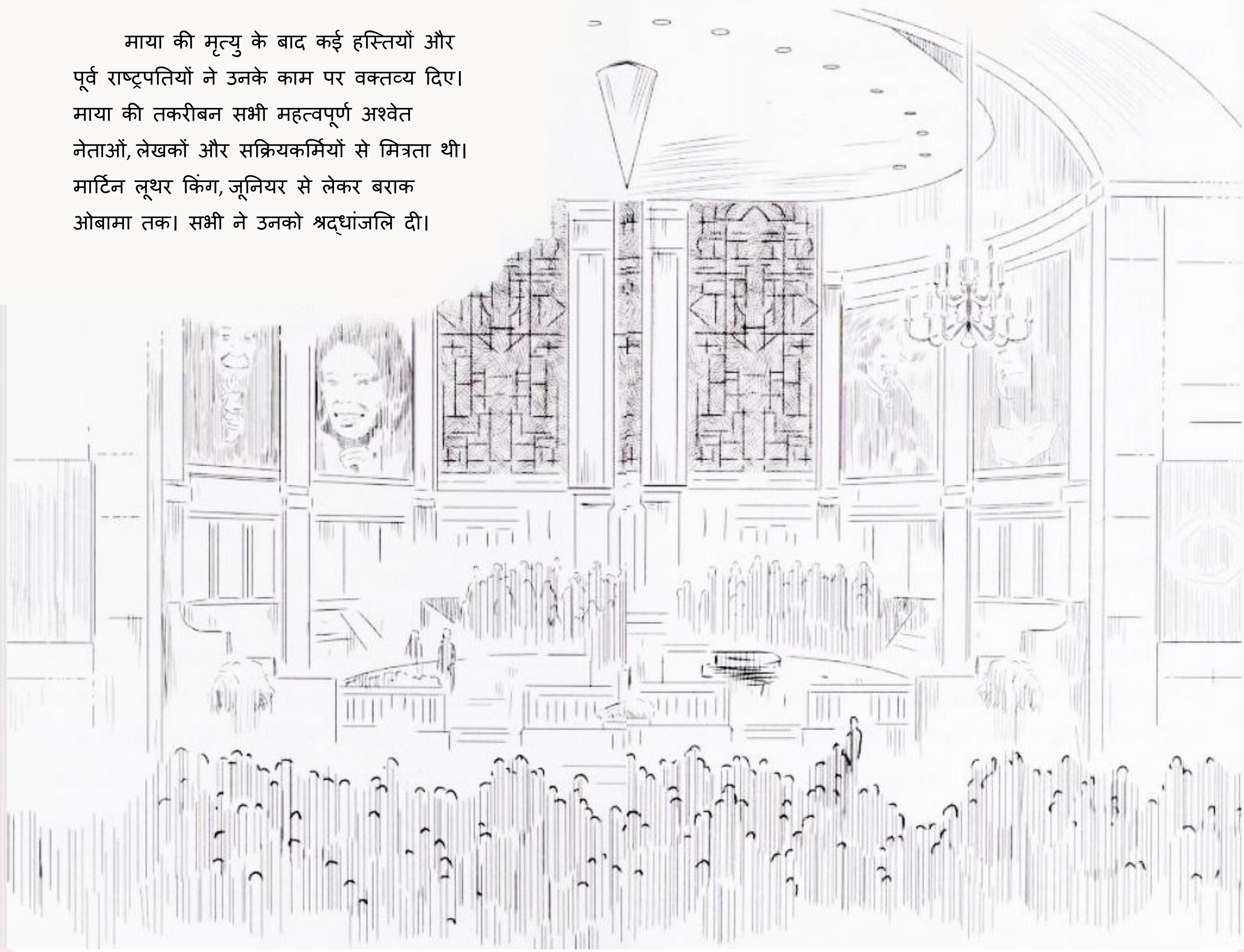


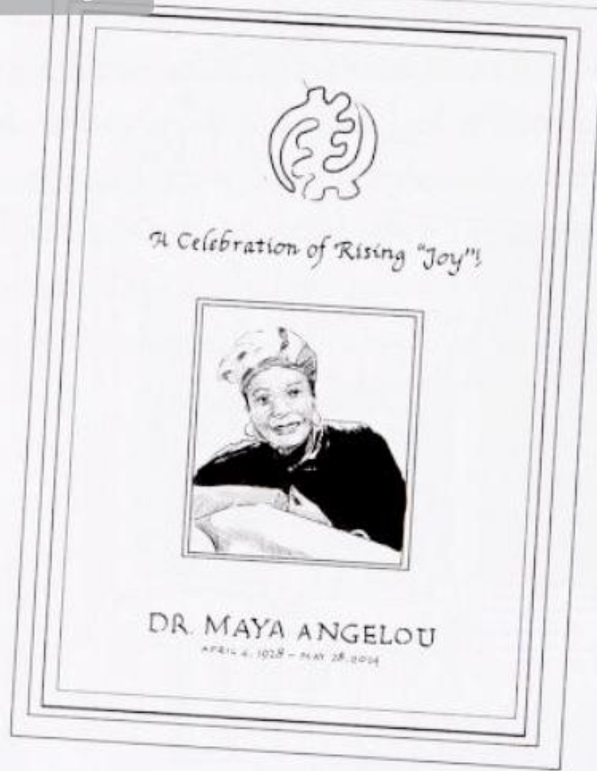
28 मई 2014 को माया एंजलो की अपने नॉर्थ कैरोलाइना स्थित घर में शान्ति से मौत हुई। वे छियासी वर्ष की थीं। अमरीकी डाक सेवा ने उनके सम्मान में 7 अप्रेल 2015 को एक टिकट जारी किया। इस पर उनके चित्र के साथ उनका एक उद्धरण भी था, ‘‘पाखी इसलिए नहीं गाता कि उसके पास जवाब है, वह इसलिए गाता है क्योंकि उसके पास एक गीत है।’’



माया ने अपने जीवन में तीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कीं। इसमें ग्यारह आत्मकथाएं, और चौदह काव्य संकलन थे। उन्होंने बच्चों के लिए भी लिखा, जिसमें उनकी प्रसिद्ध *लाइफ डज़न्ट फ्राइटन मी* भी शामिल है। यह किताब उनकी एक कविता पर आधारित है। उनकी अधिकतर किताबें बेस्ट सैलर बनीं।

माया की मृत्यु के बाद कई हस्तियों और पूर्व राष्ट्रपतियों ने उनके काम पर वक्तव्य दिए। माया की तकरीबन सभी महत्वपूर्ण अश्वेत नेताओं, लेखकों और सक्रियकर्मियों से मित्रता थी। मार्टिन लूथर किंग, जूनियर से लेकर बराक ओबामा तक। सभी ने उनको श्रद्धांजलि दी।





राष्ट्रपति बराक ओबामा ने कहा, ''माया के अनेक रूप थे - लेखक, कवि, नागरिक अधिकारकर्मी, नाटककार, अभिनेत्री, निर्देशिका, संगीतकार, गायिका और नर्तकी। पर इन सबसे ऊपर वे एक अद्भुत किस्सागो थीं, और उनकी सबसे उम्दा कहानियाँ सच्ची थीं।''

''तकलीफों और उत्पीड़न ने उन्हें उनके बचपन में मूक बना दिया था। पर जब उन्होंने अपनी आवाज़ फिर से तलाश ली तो वह ऐसी थी जिसने अमरीकियों की कई पीढ़ियों को बादलों में इन्द्रधनुष खोज लेने में मदद की। उन्होंने हमारे जैसे तमाम लोगों को अपना श्रेष्ठतम बनने की प्रेरणा दी।''

माया एंजलो के जीवन का तिथिक्रम

1928 4 अप्रेल को मार्गरीट एनी जॉनसन का जन्म सेंट लूईस्, मिसूरी में हुआ।

1931 उन्हें दादी के साथ रहने के लिए स्टैम्पस्, आर्केन्सॉ भेज दिया गया।

1941 वे अपनी माँ के साथ सैन फ्रांसिस्को में रहने लगीं।

1944 सैन फ्रांसिस्को की पहली काली केबल कार कंडक्टर बनीं।

1945 पुत्र क्लाइड बेली 'गाय' का जन्म।

1953 अपना नाम बदल कर माया एंजलो रख लिया।

1960 डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर के संगठन सदर्न क्रिश्चियन लीडरशिप कॉनफेरेंस के समन्वयक के रूप में काम करना शुरू किया।

1969 माया की पहली आत्मकथा *आई नो व्हाय द केज्ड बर्ड सिंगस्* का प्रकाशन।

1972 पहला कविता संग्रह *जस्ट गिव मी अ कूल ड्रिंक ऑफ वॉटर 'फोर आई डाऽऽऽई* प्रकाशित हुई और पुलित्ज़र पुरस्कार के लिए नामित हुई।

1977 टेलिविज़न की लघु श्रृंखला *रूटस्* में अभिनय।

1982 वेक फॉरेस्ट विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बनीं।

1993 राष्ट्रपति बिल क्लिन्टन के पदग्रहण समारोह में अपनी कविता *ऑन द पल्स ऑफ मार्निंग* का पाठ किया।

2000 नैशनल मैडल ऑफ फ्रीडम से सम्मानित।

2008 4 अप्रेल को अपनी अस्सीवीं सालगिरह मनाई और उनकी पुस्तक *लैटर टू माय डॉटर* का प्रकाशन हुआ।

2010 देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रैसिडेन्शियल मैडल ऑफ फ्रीडम से सम्मानित किया गया।

2014 28 मई को विन्स्टन-सलेम, नॉर्थ कैरोलाइना में मृत्यु।

वैश्विक तिथिक्रम

1928 अमेलिया एरहार्ट अटलान्टिक महासागर को जहाज़ उड़ा कर पार करने वाली पहली महिला बनीं।

1931 ‘स्टार स्पैंगल्ड बैनर’ आधिकारिक रूप से अमरीका का राष्ट्रगान बना।

1940 सैन बर्नाडीनो में मैकडॉनल्डस् का पहना हैमबर्गर स्टैण्ड खुला।

1947 जैकी रॉबिनसन, ब्रुकलिन डॉजर्स में शामिल हुए, मेजर लीग बास्केटबॉल खेलने वाले अमरीका के पहले अफ्रीकी-अमरीकी खिलाड़ी बने।

1954 अमरीका के सर्वोच्च न्यायालय ने घोषणा की काले और गोरे बच्चों के स्कूल पृथक नहीं रखे जा सकते।

1955 मॉन्टेगोमरी, एलाबामा में गोरी सवारी के लिए सीट खाली नहीं करने के जुर्म में रोज़ा पार्कस् की गिरफ्तारी।

1960 अमरीका के 90 प्रतिशत घरों में टेलिविज़न की सुविधा उपलब्ध हो गई।

1972 अटारी कम्पनी ने पोंग नामक खेल बाज़ार में उतारा, जो सबसे लोकप्रिय शुरुआती विडियो गेम बना।

1981 सौन्डा डे ओकॉनर अमरीकी की सबसे बड़ी अदालत की पहली महिला न्यायाधीश बनीं।

2001 11 सितम्बर को न्यू यॉर्क के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर के जुडवाँ टावर्स पर और वॉशिंगटन में पैन्टगॉन भवन पर आतंकी हमला हुआ।

2009 बराक ओबाम अमरीका के पहले अफ्रीकी-अमरीकी राष्ट्रपति चुने गए।